

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

भारत देश में नीति-निर्माताओं को यह देखना होगा कि भारत में इन दवाओं के लिए क्या REMS-समान कार्यक्रम लागू हैं या हो सकते हैं, और अस्पतालों-क्लीनिक्स में जोखिम-प्रबंधन (risk-management) संरचनाएँ मजबूत हों। जाने

प्रमुख बिंदु और देशांतर

- कुछ कैसर-दवाओं पर "बॉक्सेड वार्निंग" (सबसे गंभीर चेतावनी) जोड़ी गई है।
- ऐसा कहा गया है कि यदि दवा इस्तेमाल के बाद कोई गंभीर जोखिम सामने आता है (उदाहरण के लिए मृत्यु, अत्यधिक विषाक्तता), तो दवा निर्माता को लेबलिंग बदलने, सुरक्षित उपयोग कार्यक्रम (REMS - Risk Evaluation and Mitigation Strategy) लागू करने आदि का निर्देश दी गई है।
- कुछ दवाओं के लिए नए आवश्यक जेनेटिक परीक्षण (genetic testing) की शर्तें रखी गई हैं, ताकि "कुछ रोगियों में घातक प्रतिक्रियाओं" से बचा जा सके।
- वहीं, कुछ दवाओं के लिए पहले जो REMS कार्यक्रम था, उसे हटाया गया — अर्थात् जोखिम कम प्रमाणित हो गया है।

विश्लेषण के साथ विवरण

- Capecitabine के लिए जेनेटिक परीक्षण चेतावनी FDA ने Capecitabine (एक आम कैसर-कीमोथेरेपी दवा) के लिए dihydropyrimidine dehydrogenase (DPD) जिन का परीक्षण करवाने की आवश्यकता के साथ बॉक्सेड चेतावनी जोड़ी है। कारण: इस दवा के उपयोग से लगभग 1,300 चौथे सालाना अनुमानित हैं (US में) — जो लगभग 2.5 लाख रोगियों में से हैं। महत्व: इससे स्पष्ट है कि सिर्फ दवा मंजूर होना ही सुरक्षित उपयोग की गारंटी नहीं देता — रोगी-विश्लेषण आयु, आनुवंशिक प्रस्थिति, अन्य रोगों का इतिहास आदि जानना जरूरी है। भारत-सीधा अर्थ: यदि यह दवा भारत में उपयोग में है, तो डॉक्टरों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि संभव हो तो DPD परीक्षण हो जाए, और रोगी को संभावित जोखिम स्पष्ट रूप से समझाया जाए।

- Duvelisib और Denosumab-bnht के लिए REMS-अपडेट Duvelisib (ब्रांड नाम Copiktra) में गंभीर विषाक्तताओं का जोखिम पाया गया है — जैसे संक्रमण, दस्त या कोलाइटिस, त्वचा-प्रतिक्रियाएँ, निमोनिटिस। Denosumab-bnht (ब्रांड नाम Conexence) जो कि विशेष रूप से एडवॉन्ड क्रॉनिक किडनी डिजीज वाले रोगियों में है, उन्हें भयंकर हाइपोकैल्सीमिया (रक्त में कैल्शियम का बहुत कम होना) का सामना करना पड़ सकता है। व्याख्या: REMS कार्यक्रम में ये अपडेट बताता है कि जो दवाएँ पहले से उपयोग हो रही थीं, उनके नए आंकड़ों के आधार पर जोखिम पुनर्मूल्यांकन हुआ है। क्लिनिकल टिप: डॉक्टरों और हेल्थकेयर टीम को इन दवाओं को लिखते/प्रशासित करते समय, रोगी की



किडनी फंक्शन, कैल्शियम-स्थिति, संक्रमण की प्रवृत्ति आदि का विशेष ध्यान रखना होगा।

- Ciltacabtagene autoleucel (CAR-T थैरेपी) में नया बॉक्सेड वार्निंग CAR-T थैरेपी के अंतर्गत, इस दवा के लिए FDA ने ऐसा बॉक्सेड चेतावनी जोड़ी है कि "इम्यून इफेक्टर सेल-संबंधित एंटेरोकोलाइटिस" (immune-mediated intestinal inflammation) हो सकता है, जो कि बुखार, दीर्घकालीन दस्त, पेट में दर्द, वजन घटना, और कभी-कभी बाउल पोरफोरेशन (आंत फटना) व सैप्सिस (संक्रमण से रक्तविषाक्तता) तक जा सकती है। लगभग 8,500 से अधिक मरीजों में इस थैरेपी का उपयोग हुआ है और इसके बावजूद FDA ने कहा कि इस दवा का जोखिम/लाभ अनुपात (risk/benefit ratio) अभी भी "अनुकूल" (favourable) है। व्याख्या: CAR-T जैसी अत्याधुनिक थैरेपी में भी गंभीर लंबी अवधि की जटिलताएँ हो सकती हैं — इसलिए मेडिकल टीम को रोगी-मानिट्रिंग, देख-से आने वाली लक्षणों की सतर्कता और रोगी-शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। भारत-संबंधी विचार: CAR-T थैरेपी यदि भारत में उपलब्ध है या भविष्य में होगी, तो इन जटिलताओं के लिए अस्पतालों में अनुभव व इंफ्रास्ट्रक्चर होना अनिवार्य होगा।

- Pexidartinib में जिगर- (लीवर) संबंधी घातक जोखिम इस दवा के लिए FDA ने REMS अपडेट जारी किया है क्योंकि यह दवा "संभावित घातक जिगर को नुकसान पहुँचाने वाली" है — विशेष रूप से "vanishing bile duct syndrome" जैसा दुर्लभ लेकिन गंभीर रोग। महत्व: यह दर्शाता है कि कभी-कभी दवाएँ जिगर के साथ स्पष्ट हों, लेकिन मरीजों में अनपेक्षित लंबी अवधि की जटिलताएँ सामने आ सकती हैं — इसलिए निरंतर पोस्ट-मार्केट निगरानी (post-approval monitoring) महत्वपूर्ण है। टिप: चिकित्सक को लीवर फंक्शन जांच को नियमित रूप से करने एवं रोगी को लिवर संबंधी कोई लक्षण देने पर

तुरंत कार्रवाई करनी होगी।

- लेबलिंग व पोस्ट-मार्केट सुरक्षा दिशानिर्देशों में बदलाव FDA ने एक ड्राफ्ट गाइडेंस जारी की है जिसमें स्पष्ट किया गया है कि यदि किसी स्वीकृत दवा के बाद "गंभीर सुरक्षा समस्याएँ" सामने आती हैं (चाहे दवा अब मार्केट में सक्रिय न हो), तो निर्माता को लेबलिंग बदलने, REMS सामग्री और दस्तावेजों को अप-डेट करने का निर्देश होगा। साथ ही, उदाहरण के तौर पर Vandetanib (Caprelsa) के लिए REMS कार्यक्रम को हटा दिया गया है क्योंकि लगभग 10 साल के अनुभव में उस जोखिम (टॉसिडैस डर्माइटिस आदि) का केस नहीं मिला। मर्म-बिंदु: चिकित्सा विज्ञान में स्थायित्व नहीं है — आज सुरक्षित माने गई दवा कल नई जानकारी के कारण जोखिम-निर्धारित हो सकती है, और इसलिए निरंतर निगरानी व अपडेट अनिवार्य हैं।

"लंबी अवधि" और "भारत-परिप्रेक्ष्य" में क्या सीख मिलती है यह स्पष्ट है कि कैसर उपचार दवाओं के क्षेत्र में न सिर्फ रन-यौ मंजूरी महत्वपूर्ण है बल्कि रस्वीकृति के बाद की सुरक्षा समीक्षा भी बेहद अहम है। भारत में, जहाँ दवाओं की पहुँच, चिकित्सकीय अनुभव, जेनेटिक परीक्षण की उपलब्धता, और रोगी-शिक्षा की आवश्यकताएँ अमेरिका से भिन्न हो सकती हैं, वहाँ ये अपडेट विशेष महत्व रखते हैं:

- चिकित्सक-समूह को इन नए चेतावनीयों से अवगत होना चाहिए
- रोगियों को समझाना चाहिए कि "दवा लिखने से पहले" उनके लिए क्या जोखिम-भुगतान (risk/benefit) है।
- अस्पतालों व क्लीनिक्स में अनुवर्ती निगरानी-प्रणाली (follow-up monitoring) सुनिश्चित होनी चाहिए।
- यदि जेनेटिक परीक्षण उपलब्ध है (जैसे DPD परीक्षण), तो उसे संभव बनाना चाहिए — चाहे वह खर्च-सहायता के साथ क्यों न हो।

न्यूमोनिया (Pneumonia)

न्यूमोनिया फेफड़ों की सूजन (lungs का अल्वियोलो/छोटे वायुमार्गों का संक्रमण) है, जो बैक्टीरिया, वायरस, फंगल या अन्य सूक्ष्मजीवों द्वारा होती है। इसका असर हल्का बुखार/खांसी से लेकर गंभीर श्वास-कष्ट, ऑक्सिजनेशन का स्तर गिरना और मृत्यु भी हो सकता है — विशेषकर बुजुर्गों, नवजात/शिशुओं और कमजोर प्रतिरक्षा वालों में।

कारण (Causes)
बैक्टीरिया: सबसे सामान्य — Streptococcus pneumoniae (न्यूमोकोकस), Haemophilus influenzae, आदि।
वायरस: Influenza, SARS-CoV-2 (COVID-19), RSV इत्यादि।
अन्य: फंगी या शरीर के बाहर से aspiration (उल्टी/दमा की वजह से साँस नली में पदार्थ जाना)।

लक्षण (Typical symptoms)

- खांसी (कभी-कभी बलगम/रक्त सहित)
- तेज बुखार, ठंड लगना, पसीना
- सीने में दर्द (खाँसे/साँस लेते समय बढ़ता)
- तेज/छीटे हुई साँसें, साँस फूलना (shortness of breath)
- थकान, भूख न लगना, सतर्कता में कमी (बुजुर्ग/शिशु)।

निदान (Diagnosis)
शारीरिक परीक्षा (Stethoscope से फेफड़ों की आवाजें)

छाती का एक्स-रे (Chest X-ray) — फेफड़ों में चेतन क्षेत्र दिखाता है।
ब्लड टेस्ट, ऑक्सिमेट्री (SpO₂), बलगम/नासोफैरिंजियल स्वेब से सूक्ष्मजीव की पहचान (यदि आवश्यक)।

गंभीर मामलों में CT-scan या ब्लड कल्चर, और श्वसन-PCR/माइक्रोबायोलॉजी प्रयोगशाला परीक्षण।

उपचार (Treatment) — सिद्धांत यदि बैक्टीरियल संदेह: उपयुक्त एंटीबायोटिक (स्थानीय दिशानिर्देश/रिसिस्टेंस पैटर्न के अनुसार)।

वायरल कारण: कुछ वायरस के लिए एंटीवायरल दवाएँ (जैसे इन्फ्लुएंजा) और समर्थनात्मक चिकित्सा। COVID/RSV जैसी स्थितियों में विशेष उपचार/निरोधक उपाय उपयोगी रहे हैं।

सपोर्टिव केयर: ऑक्सिजन सपोर्ट, तरल पदार्थ, बुखार नियंत्रण, श्वसन पर निगरानी।
अस्पतालों में भर्ती: गंभीर श्वास-कष्ट, कम ऑक्सीजन, बुजुर्ग/सह-रुग्णाता वाले रोगी।

रोकथाम (Prevention)

- टीकाकरण — सबसे असरदार सार्वजनिक

स्वास्थ्य कदमों में से है (न्यूमोकोकस तथा अन्य वैक्सीन)।
2. हाथ-साफ़ी, मास्किंग (उच्च जोखिम/रिस्क सौजन्य में), धूम्रपान त्यागना, और कमजोरों की समय पर पहचान व इलाज।
3. गर्भवती माताओं व नवजातों के लिये साइट-विशेष निर्देश (जहाँ लागू)।

नवीनतम/ताजा विकास (Latest developments — प्रमुख बिंदु)

- डब्ल्यूएचओ का अद्यतन दिशानिर्देश (2024) — विश्व स्वास्थ्य संगठन ने बच्चों (10 वर्ष तक) में निमोनिया और दस्त के प्रबंधन के लिए अद्यतन मार्गदर्शिका जारी की (प्राथमिक स्वास्थ्य-स्तर के प्रबंधन हेतु सिफारिशें)। यह दिशानिर्देश देशों और प्राथमिक स्वास्थ्य प्रणालियों को केस पहचान, ओवर-/अंडर-ट्रीटमेंट रोकने और बच्चे की देखभाल मानकीकृत करने में मदद करता है।

- न्यूमोकोकल (Streptococcus pneumoniae) वैक्सीन के वैरिएंट और स्वीकृतियाँ — हाल के वर्षों में अधिक वैलेंसी वाले प्लुरिवैलेंट कंजुगेट वैक्सीन (PCV20, PCV21 जैसे) विकसित/स्वीकृत हुए हैं, और कई देशों ने बड़े व्यक्तियों एवं बच्चों के लिये इनका उपयोग बढ़ाया है। इससे न्यूमोकोकल-कारणों से होने वाली गंभीर बीमारियों (जिनमें निमोनिया भी शामिल है) को रोकथाम में सुधार की उम्मीद है। (उदाहरण: PCV21 के वायरसों में उपयोग के लिए अमेरिका में स्वीकृति — 2024; PCV20 के यूरोपीय/अन्य अनुमोदन भी 2024-2025 में)।

- RSV-रोधी इंटरवेंशन (नवजात/शिशुओं में) — शिशुओं में गंभीर RSV-निमोनिया से बचाव के लिए नाइसेविमब (nirsevimab) -सरीखे लॉन्ग-एक्टिंग मोनोक्लोनल एंटीबॉडीज ने अच्छा असर दिखाया है और मौसमी कार्यक्रमों में उपयोग किए गए; 2024-2025 सीजन में प्रभावशीलता के सकारात्मक आंकड़े प्रकाशित हुए हैं। 2025 में और नए मोनोक्लोनल दवाओं/अनुसंधानों पर भी काम/सिफारिशें जारी हुई हैं। यह नवजातों/कम उम्र के बच्चों में RSV-नियंत्रण के नए रास्ते खोलता है।

- एंटीबायोटिक-प्रतिरोध (Antimicrobial resistance — AMR) की तीव्र वृद्धि — डब्ल्यूएचओ और बड़े सर्वेक्षण दिखाते हैं कि वैश्विक स्तर पर एंटीबायोटिक-प्रतिरोध बढ़ रहा है; कुछ क्षेत्रों में पहली-लाइन

उपचारों के प्रति प्रतिरोध बहुत अधिक देखा गया है। इसका अर्थ: पारंपरिक एंटीबायोटिक्स का अंधर घट सकता है, इसलिए रोगी-स्तर पर स्थानीय संवेदनशीलता रिपोर्ट और राष्ट्रीय एएमआर नीति महत्वपूर्ण हैं। ये विकास निमोनिया के प्रबंधन को जटिल बना रहे हैं।

- भारत में सामुदायिक/राष्ट्रीय पहल — भारत ने बाल निमोनिया नियंत्रण के लिये (SAANS 2024-25 जैसे) कार्यक्रम और गाइड-नोट्स प्रकाशित कर छोटे बच्चों को Pneumococcal वैक्सीन देने, स्थानीय निगरानी और प्राथमिक देखभाल-मजबूती पर जोर दिया है। यह राष्ट्रीय स्तर पर निमोनिया मृत्यु दर कम करने का प्रयास है।

सार्वजनिक-स्वास्थ्य (संक्षेप) टीकाकरण (पीसीवी प्रका) और आरएएसी - रोधक उपायों के व्यापक उपयोग से अस्पतालों में भर्ती और घातक निमोनिया घटनाओं की क्षमता बनी है — परंतु एएमआर की बढ़ोतरी और नए पाथोजेन्स चुनौती दे रहे हैं। (यहाँ स्रोत ऊपर दिये गये हैं)।

मरीज/परिवार के लिये व्यावहारिक सुझाव

- यदि श्वास तेज, छाती में दर्द, साँस कम या हॉट/चैहरे का नीलापन दिखे — तुरंत चिकित्सा सहायता लें।
- छोटे बच्चों में तेज बुखार, खिलने में कमी या साँस लेने में असामान्यता पर सावधानी।
- नियमित टीकाकरण कराएँ — बच्चों के लिए PCV और जहाँ सुझाया गया हो वहाँ अन्य वैक्सीन।
- डॉक्टर से लोकल एंटीबायोटिक-स्पेक्ट्रम/प्रेरित दिशानिर्देशों के अनुसार ही दवाई लें (स्वयं दवा न शुरू करें)।
- हाथ-साफ़ी, भीड़ वाले स्थानों में मास्क (खासकर मौसम में/जोखिम में) और धूम्रपान न करने का परामर्श।

निष्कर्ष (Summary) न्यूमोनिया एक सामान्य परंतु गंभीर रोग है — उसकी रोकथाम में टीकाकरण, सही निदान/समय पर इलाज, तथा सार्वजनिक-स्वास्थ्य कदम सबसे निर्णायक हैं। 2024-2025 के नवीन विकास (बेहतर पीसीवी वैक्सीन वैरिएंट, नव-उपचार/मोनोक्लोनल-रोधक RSV के लिये, और डब्ल्यूएचओ के अपडेटेड दिशानिर्देशों) सकारात्मक संकेत देते हैं, पर एंटीबायोटिक-प्रतिरोध एक बड़ी चुनौती बनी है — इसलिए जागरूकता, निगरानी और जिम्मेदार एंटीबायोटिक उपयोग अनिवार्य हैं।

एक त्वरित और सौम्य समाधान - ग्रीन ट्रिक्स

क्या आप घेरे के अनचाहे बालों से निपटने के लिए किसी प्राकृतिक उपाय की तलाश में हैं? क्या शायद आपके लिए एक बेहतर विकल्प हो सकता है। अपने अवरुद्ध स्वरूप लक्षणों के लिए जाना जाने वाला प्याज, घेरे के बालों को प्राकृतिक रूप से नियंत्रित करने में भी एक बेहतर विकल्प हो सकता है। इसके नियमित इस्तेमाल से बालों के रोम धीरे-धीरे कमजोर हो सकते हैं, जिससे बालों का विकास कम हो सकता है। आइए जानें कि रसोई में इस्तेमाल होने वाला यह आम सामान कैसे आपके घर पर बालों को हटाने के आसान तरीके का हिस्सा बन सकता है। बालों को हटाने के लिए प्याज के अनोखे गुण बालों को हटाने के मामले में प्याज एक शक्तिशाली लैथियर है, खासकर इसमें मौजूद सल्फर की वजह से। प्याज का लगातार इस्तेमाल बालों के जेनेटिक को कमजोर कर धीरे-धीरे कम कर सकता है। इसके अलावा, प्याज में मौजूद शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट और पोषक तत्व दोहरी भूमिका निभाते हैं। ये न केवल आपके त्वचा को पोषण देते हैं, बल्कि सूजन को भी कम करते हैं, जिससे अनचाहे बालों से छुटकारा पाने का एक प्यारी तरह से प्राकृतिक और रसायन-मुक्त तरीका मिलता है।



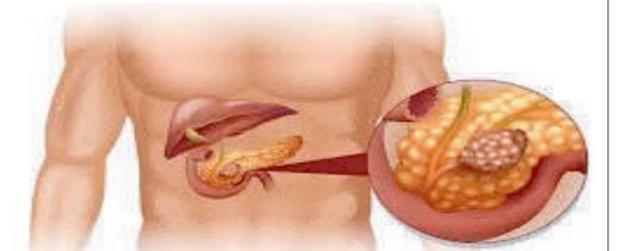
- साफ़ हो।
चरण-दर-चरण निर्देश:
- प्याज को छीलकर छोटे टुकड़ों में काट लें।
 - प्याज को पीसने के लिए सोखल और मसूल या ब्लेंडर का प्रयोग करें और पेस्ट जैसा बना लें।
 - वैकल्पिक रूप से, आप पेस्ट की प्रभावशीलता बढ़ाने और इसे आसानी से लगाने के लिए इसमें थोड़ा सा बेसन भी मिला सकते हैं।
 - इस मिश्रण को अनचाहे बालों वाले क्षेत्रों पर धीरे से लगाएँ।
 - मिश्रण को लगभग 15-20 मिनट तक रखना रखने दें।
 - गुनगुने पानी से धो लें और लगाए गए क्षेत्र को

गोलाकार गति में घेरे से रगड़ें।
अनुप्रयोग आवृत्ति: सर्वोत्तम परिणामों के लिए, इस प्याज उपचार का उपयोग सप्ताह में दो से तीन बार करने की सलाह दी जाती है। लगातार इस्तेमाल से, आपके कुछ स्थलों में बालों के विकास में कमी दिखाई देगी, जिससे आपके त्वचा चिकनी और बालों से मुक्त हो जाएगी।
अनुभव सातार: अपनी त्वचा की देखभाल की दिग्दर्शिका में इस प्राकृतिक प्याज-आधारित विधि को शामिल करके, आप निम्नलिखित कठोर रासायनिक उपचार का सहायक लिट, गुलाबज और बाल-मुक्त त्वचा का लाभ उठा सकते हैं। घेरे के बालों को हटाने के एक गुलाबज और प्रभावी तरीके के लिए प्याज के वैश्विक गुणों की सराहना करें।

दुनिया का सबसे खतरनाक कैंसर: अग्नाशय (Pancreatic) कैंसर

शुरुआती 8 चेतावनी संकेत जिन्हें हर बुजुर्ग व्यक्ति को जानना चाहिए

- संक्षेप में सार:** अग्नाशय कैंसर को "साइलेंट किलर" कहा जाता है क्योंकि इसके शुरुआती लक्षण बहुत हल्के और भ्रमित करने वाले होते हैं। जब तक इसका पता चलता है, तब तक अक्सर यह बहुत बढ़ चुका होता है। इसलिए इसके सूक्ष्म संकेत पहचानना बेहद जरूरी है।
- शुरुआती चेतावनी संकेत
 - मल का रंग फीका, तैलीय होना और अत्यधिक थकान: अग्नाशय पैंक्रियास पाचक एंजाइम नहीं बना पाता, जिससे वसा सही नहीं पचती। मल हल्का, चिकना और दुर्गंधयुक्त हो जाता है। शरीर में ऊर्जा की कमी से गहरी थकान महसूस होती है।
 - भोजन, विशेषकर तैलीय खाने के बाद पाचन में समस्या: खाने के बाद पेट भारी, गैस, मतली या उल्टी जैसा महसूस होना — यह एंजाइम की कमी और अग्नाशय की गड़बड़ी का संकेत है।
 - त्वचा में लगातार खुजली: जब पित्त नलिकाएं दब जाती हैं, तो बिलीरुबिन रक्त में बढ़ता है, जिससे त्वचा में खुजली होती है — खासकर हथेलियों और पैरों में।
 - दृष्टि धुंधली होना और मानसिक सुस्ती



(Brain Fog): इंसुलिन उत्पादन में गड़बड़ी से ब्लड शुगर असंतुलित होता है, जिससे आंखों की रेटिना और दिमाग पर असर पड़ता है — नतीजा, दृष्टि में कमी और ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई।
5. अकारण वजन घटना: पोषण सही से अवशोषित न होने से बिना कोशिश वजन तेजी से घटता है। चेहरा कड़वा हो सकता है और शरीर दुर्बल होता जाता है।
6. पेशाब और मल के रंग में बदलाव: मूत्र गाढ़ा (चाय जैसा) और मल हल्का या सफेद दिखाई देना — यह पित्त मार्ग में रुकावट का संकेत है।
7. पीलिया (त्वचा और आंखों का पीला होना):

अग्नाशय कैंसर में ट्यूमर पित्तमार्ग को दबा देता है, जिससे शरीर में बिलीरुबिन बढ़ता है और त्वचा-आंखें पीली पड़ती हैं।
8. ऊपरी पेट या पीठ में हल्का दर्द: पेट के ऊपरी हिस्से में हल्का दर्द या दबाव जैसा महसूस होना जो झुकने या लेटने पर थोड़ा आराम दे, लेकिन बार-बार लौटे — इसे हल्के में न लें।
डॉक्टर से कब मिलें अगर इन लक्षणों में से कोई कई हफ्तों तक बना रहे, बढ़ता जाए या कई संकेत एक साथ दिखें, तो तुरंत डॉक्टर से जांच करवाएं। जल्दी पहचान होने पर उपचार के अवसर बेहतर रहते हैं।

दही... पोषण का खजाना



दही भारतीय आसरा का एक महत्वपूर्ण घटक है। दही पाचन के लिए अत्यंत है। यह एक प्राकृतिक प्रोटीन, कैल्शियम, फॉस्फोरस और विटामिन सी से भरपूर होता है। (दही के स्वास्थ्य लाभ) यह विटामिन बी12 का एक अच्छा प्राकृतिक स्रोत है। दही त्वचा की चमक के लिए अत्यंत है और दही का पेस्ट बालों के लिए बहुत अच्छा है।
दही मूत्र कण करने और वजन नियंत्रित करने में मदद करता है। (छाछ के तम) इसमें मौजूद कैल्शियम लैक्टो और प्रोटीन को मजबूत बनाता है, खासकर बच्चों के लिए। इसके अलावा दही लगाने के बार-घंटे के अंदर इसे खा लेते हैं, तो इसमें मौजूद कुछ बैक्टीरिया पेट की कार्यप्रणाली में सुधार करते हैं और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। रात में दही खाने से बचें, ठंडी प्रकृति वाले लोगों को ख्याद दही खाने से सदा-चुकाव लेना है। प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि अगर नई दही का नियमित सेवन

कोशिकाओं में रासायनिक प्रक्रियाओं को बढ़ाता है जिससे गैरिफिक में सकारात्मकता बढ़ती है, चिंता, नकारात्मक विचार और अवसाद कम होते हैं और नकारात्मक स्वास्थ्य बनाए रखने में मदद मिलती है। सही मात्रा में और सही समय पर दही का सेवन शरीर को स्वस्थ रखता है। तब स्वस्थ शरीर बन प्रबल रहता है। छाछ क्यों पीनी चाहिए? नियमित रूप से छाछ का सेवन करने वाला व्यक्ति बीमारियों से दूर रहता है। छाछ शरीर की गर्मी और अम्लता को कम करती है। छाछ के रोगों के लिए छाछ बहुत उपयोगी है। एक कप ताजा दही की छाछ में सैंन, जोरा और चंदन मिलाकर पीने से बवासीर और पेट दर्द में आराम मिलता है। छाछ में तैलिक एसिड होने के कारण यह पाचन तंत्र के लिए फायदेमंद है। इसमें प्रोटीन, आयरन और विटामिन सी भरपूर मात्रा में होता है। दो से तीन कप दही लेकर अपने एक गिलास पानी मिलाकर पचाना छाछ पीने से पूरे शरीर और पेट का स्वास्थ्य बेहतर होता है। दोपहर के भोजन के एक घंटे बाद छाछ पीना चाहिए।

सोने से पहले यह मिश्रण जीभ के नीचे रखें और थकान के बिना जागें!



इस मिश्रण को सोने से पहले अपनी जीभ के नीचे रखें और फिर कभी थके हुए न उठें! ...

नौद शरीर के संतुलन और उपचार के लिए अत्यंत आवश्यक है। खासकर नींद से हट कर, स्ट्रेक, नुच में निरादर और कमजोर रोग प्रतिरोधक क्षमता का खतरा बढ़ता है, जबकि अशुद्ध नींद, यकृत, गुड और यौन जीवन को बेहतर बनाती है। प्राकृतिक नौद उपाय: 5 कप वनस्पति शर्करा में 1 कप गुलाबी मिलातलन बनाकर मिलाएँ। इस मिश्रण को काँच के जार में रखें। सोने से पहले थोड़ी मात्रा जीभ के नीचे रखें और उसे धीरे-धीरे घुलने दें। यह कभी कारगर है: रात में शरीर की ऊर्जा (स्वाइकोजन) घट जाती है। शब्द लक्ष्य

इंसुलिन बढ़ता है जिससे टिपेटिन → सेरोटोनिन → मेलाटोनिन बनाता है — जो नींद का प्रमुख हार्मोन है। मिलातलन बनाकर शरीर को आरामक खींचता देता है, जनावर सन्तान को संतुलित करता है और रातभर पुनर्स्थापन में मदद करता है। यह प्राकृतिक मिश्रण शरीर को शांत करता है, नींद को गहरा बनाता है और सुकृत तराजो, ऊर्जाजनक महसूस करता है।

“मुख और जीभ में छाले, लार का लगातार टपकना, बोलने-खाने में कठिनाई”

लेम्फोमा + आयुर्वेद + स्थानीय उपचार (कुत्ला) के संयुक्त प्रयोग से यह समस्या बहुत लव तक ठीक की जा सकती है।
संयुक्त संशोधित उपचार योजना (Post-Cancer Oral Ulcers + Excess Saliva) मुख्य लैम्फोमा के उपचार

- Mercurius Solubilis 30 अशुद्धिक ताप टपकना, बदन, दर्द, जीभ भारी या सूजी हुई। यह मुख्य दवा है आयुर्वेद के लिए। मात्रा: 5 बूँद × दिन में 3 बार (भोजन से 1/2 घंटा पहले)।
- Borax 30 बूँद के अंदर छाले, जलन, जीभ और गाल में दर्द। खाना खाते समय जलन बढ़े। मात्रा: 5 बूँद × दिन में 3 बार।
- Kali Chloricum 6x (Biochemic) मुख की जलन, घाव और संक्रमण में उपयोगी, मात्रा: 4 गोलीयों × दिन में 3 बार जीभ पर घुमाएँ।
- Calendula Q (नरद टिपेटिन) मुख घोंघे (mouthrinse) के लिए सर्वोत्तम है। प्रयोग: 1 कप गुनगुना पानी + 10 बूँद Calendula Q → दिन में 4-5 बार कुत्ला करें। कुत्ला किनते नहीं। इससे छाले, संक्रमण और दर्द तुरंत शांत होता है। आयुर्वेदिक सस्येण (सुरक्षित)
- Yashthimadhu (यूरी) यूर्य या टैक्लेट शीतल, मुख की रस्तेमा दिल्ली को पुनर्स्थापित करती है। मात्रा: 1/2 कप वनस्पति शर्करा में मिलाकर धीरे-धीरे जीभ पर रखें, दिन में 2 बार।
- Triphala Guggul (त्रिफली संगोजन) मुख की सूजन, टैक्सिस विफलता, और पाचन सुधार के लिए। मात्रा: 1 टैक्लेट × दिन में 2 बार, भोजन के बाद गुनगुने पानी से।
- Oil Pulling (नारियल तेल कुत्ला) सुकृत खाने की 1 कप वनस्पति शर्करा में 10 बूँद × 3-5 मिनट तक घुमाएँ, फिर थूक दें। इससे मुख की स्वच्छता, लार संतुलन, और सूजन में बहुत लाभ होता है। धरेल्य उपचार
- भोजन गुनगुना और गुलाबज तेल (दहीया, मूत्र विद्युत, सूप)।
- अत्यधिक गरम, खट्टा, तीखा, नमकीन, या ड्राय फूड न लें।
- दिन में 8-10 बार सादा ठंडा पानी या केलेटुला नाथ्य रिस करें।
- बोलने से पहले थोड़ी देर गुनगुना पानी या शब्द जीभ पर लगाएँ — अस्थायी आराम देता है। प्राकृतिक सस्येण (यदि उपलब्ध हो)
- Wheatgrass juice — रोज 20-30 ml, सुकृत खाने की (मुख की कोशिकाएँ पुनर्स्थापित करता है)
- Aloe vera juice (शुद्ध) — 10 ml × 2 बार अशुद्धिक सुधार
- 7-10 दिनों में लार टपकने में कमी।
- 15 दिनों में छालों में आराम, खाने में सुविधा।
- 4-6 सप्ताह में बोलने और मुख-नियंत्रण में स्पष्ट सुधार। विशेष ध्यान सभी दवाओं को डोज में रखें — कोई साइड अफेक्ट नहीं। दवाएँ केवल स्वच्छ रूप से लें, नाथ्योत्पत्ती को किनते नहीं। दिन में प्याज आराम और जल सेवन बनाए रखें।

खाद्य पदार्थ जो आपके शरीर के स्वास्थ्य का समर्थन करते हैं



बालमन को समझने वाला चाहिए एक और 'चाचा'

डॉ. रमेश ठाकुर

बाल समस्याओं की भरमार है। कुछ समस्याएँ ऐसी होती हैं जिन्हें समझने वाला और महसूस करने वाला का अकाल है। आज 'बाल दिवस' है जिसका सीधा संबंध पूर्व प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के प्रति लगाव देखने लायक था। 'चाचा' बने कैसे? इस रहस्य से अधिकांश अनभिज्ञ हैं। वैसे, 'बाल दिवस' आजाद भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरू के जन्मदिवस पर मनाया जाता है। उनका जन्म 14 नवंबर 1889 को इलाहाबाद में हुआ था। जबकि, ये दिवस संयुक्त राष्ट्र द्वारा अधिकृत 20 नवंबर को पूरे विश्व भर में मनाया जाता है।

साल 1964 में पंडित जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के बाद, भारतीय संसद में उनके जन्मदिन को देश में

आधिकारिक तौर पर 'बाल दिवस' के रूप में स्थापित करने का प्रस्ताव एकमत से जारी किया गया। क्योंकि वह बच्चों नितंत प्रिय हुआ करते थे। उनका बच्चों के प्रति लगाव देखने लायक था। उन्हें 'चाचा' क्यों कहा जाने लगा, ये एक दिलचस्प वाक्या है। चलिए बताते हैं नेहरू के चाचा बनने की कहानी। पंडित नेहरू एक मर्तबा इलाहाबाद में चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे। मौसम जाड़े का था। सभा में एक बुजुर्ग महिला भी भाषण सुनने अपने दुधमुँह बच्चे के प्रति लगाव देखने लायक में बच्चा तेजी से रोने लगा।

सन् 1954 में, संयुक्त राष्ट्र की ओर से 20 नवंबर को अंतर्राष्ट्रीय बाल दिवस घोषित किया गया था। पर, भारत ने इस दिवस को 14 नवंबर यानी पंडित नेहरू के जन्मदिन पर मनाने का निर्णय लिया। हिंदुस्तान में ये दिन को बच्चों के अधिकारों की रक्षा करना, उन्हें सुरक्षित

वातावरण देना और उनकी शिक्षा व स्वास्थ्य पर ध्यान देने पर केंद्रित होता है। बच्चों के प्रति बढ़ते अत्याचार, बाल श्रम, और शिक्षा की कमी जैसी समस्याओं पर जागरूकता निरंती फैलती रहनी चाहिए। बच्चों को बचपन में सही मार्गदर्शन और प्यार दिया जाना चाहिए। सभी के बच्चे बिना किसी भेदभाव के स्वतंत्र रूप से सीखने और बढ़ने का अधिकार रखते हैं।

पंडित नेहरू की जैसे ही नजर बच्चे के रोने पर पड़ी, उन्होंने अपना भाषण रूकवाया और तुरंत अपने अंगरक्षक जोगेंद्र सिंह को बच्चा और उसकी मां को मंच पर लाने को कहा, मां अपने बच्चे के साथ जैसे ही मंच पर चढ़ी, नेहरू ने आगे बढ़कर स्वयं बच्चे को अपने गोद में उठा लिया। बच्चा पंडितजी की गोद में जाते ही चुप हो गया और उनके जेब में लगे पेन से खेलने लगा। बच्चे के प्रति नेहरू के प्यार-स्नेह को देखकर सभा में

उपस्थित लोग अचंभित हो गए और उसी समय से लोगों ने उन्हें 'चाचा' कहना शुरू कर दिया। बच्चों के प्रति उनकी दीवानगी की ललक हम सभी में भी जगे, उसी मकसद को आज का ये खास दिवस पूरा करता है।

बच्चे से प्यार तो हर कोई करता है। पर, नेहरू का प्यार बेशकीमती, अद्भुत, चमत्कारी होता था। रोते हुए बच्चे भी उनके समुच्च जाकर एकाएक चुप हो जाते थे। बच्चों को चुप कराने की उनके पास पता नहीं कौनसी अद्भुत कला थी, जो सभी आश्चर्यचकित करती थी। सालाना हिंदुस्तान में 'बाल दिवस' बड़े उत्सव के तौर पर मनाया जाता है। ये दिवस बच्चों को ढेर सारा स्नेह, उपहार और लाड-प्यार देने को समर्पित होता है। जवाहरलाल नेहरू शुरू से बच्चों के अधिकारों और एक शिक्षा प्रणाली के पक्षधर और समर्थक रहे थे। वह प्रत्येक

बच्चे को देश का आने वाला भविष्य कहते थे, बच्चा बेशक कितना भी नटखट क्यों न हो, वह उनकी भी भरपूर सराहना करते थे।

फूलपुर की चुनावी सभा में नेहरू ने अपने प्रसिद्ध भाषणों में एक बार कहा था कि बच्चे बगीचे में कलियों की तरह होते हैं और उनका सावधानीपूर्वक और प्यार से पालन-पोषण करना चाहिए, क्योंकि वे देश का भविष्य और कल के नागरिक हैं। मौजूदा वक्त में जिस बेहिसाब से समूचे देश के नौनिहालों के प्रति अत्याचार, निर्यात किस्म की समस्याएं, और अपराध बढ़े हैं, वो अगर जिंदा होते तो बहुत दुखी होते। एनसीआरबी की सालाना रिपोर्ट बच्चों के गायब होने के जो आंकड़े प्रस्तुत करती है, वो निश्चित रूप से डरावने होते हैं। तमाम हुकूमती कोशिशों के बावजूद भी बाल समस्याएं रुकने का नाम नहीं लेती। बाल दिवस के मौके पर आज देशभर

के स्कूलों में गायन, निबंध, वाद-विवाद, खेलकूद जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित होंगी। अधिकांश जगहों पर नेहरू की जीवनी पर लेख-लेखन कम्पटीशन आयोजित होंगे। दरअसल, 'नेशनल बाल दिवस' पं० नेहरू को सच्ची श्रद्धांजलि देने का भी दिन कहा जाता है, जो इसके हकदार भी हैं। नेहरू बच्चों को राष्ट्र की संपत्ति मानते थे। साथ ही वह अक्सर नौनिहालों को मुल्क का सबसे कीमती संसाधन के रूप में भी संदर्भित करते थे। इसलिए, अपने युवा नागरिकों के जीवन की बेहतरी के प्रति राष्ट्र की प्रतिबद्धता को पुष्टि करने के लिए उनके जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज इस दिवस के जरिए बच्चों में खुशियां, उनके अधिकारों और उनके उज्वल भविष्य को संवारने के लिए जागरूकता भी फैलाई जाती है। बच्चों के प्रति जागरूकता को बढ़ाना और उन्हें

एक सुरक्षित, खुशहाल और शिक्षा से भरपूर जीवन देने के लिए आज सभी को संकल्पित भी होना चाहिए।

पंडित नेहरू हमेशा बच्चों के बीच जाकर उनके साथ समय बिताना पसंद करते थे और उनका मानना था कि बच्चों में मासूमियत, सच्चाई, और निष्ठा होती है, जो बड़ों को भी प्रेरणा देती है। शिक्षा का अधिकार, बाल श्रम से सुरक्षा और एक सुरक्षित व प्यार भरे वातावरण में बढ़ने का अधिकार हम सभी को मिलकर दिलवाना चाहिए। हालांकि, भारत में बाल अधिकारों की सुरक्षा के लिए बाल संरक्षण कानून और विभिन्न सरकारी-गैर सरकारी संस्थाएं कार्यरत हैं, जिनका उद्देश्य बच्चों के भविष्य को सुरक्षित बनाना है। इनका आम जनता को भी मिलकर सहयोग करना चाहिए।

(बाल संरक्षण कार्यकर्ता और केंद्र सरकार की बाल कल्याण समिति 'निपसिड' में सदस्य हैं)

दिल्ली बम धमाके में हुई जान माल की हानि बेहद हृदय विदारक और दुखद : वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना

आगरा। वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने दिल्ली बम धमाके की बेहद हृदय विदारक घटना में मारे गए निर्दोष लोगों की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा और घायलों के जल्द से जल्द स्वस्थ होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

वरिष्ठ समाजसेवी ने इस वीभत्स घटना पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि यह हमला पूरे देश के दिल पर प्रहार है। निर्दोष नागरिकों को इस त्रासदी ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। यह सिर्फ दिल्ली नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए अत्यंत दुखद और पीड़ादायक क्षण है। बम धमाके की इस वीभत्स घटना ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया है। इस बम धमाके से हुई जान माल की हानि बेहद हृदय विदारक और दुखद है। इस घटना ने यह साबित कर दिया है कि आतंकवाद के खिलाफ अब निर्णायक लड़ाई का समय आ चुका है। हम सभी को मिलकर आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होना चाहिए। निर्दोष नागरिकों पर इस तरह का हमला मानवता के विरुद्ध है। इस कठिन समय में हमारी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं सभी पीड़ित परिवारों के साथ हैं। उन्होंने सरकार से इस हादसे में मारे गए लोगों के परिजनों को उचित मुआवजा देने व घायलों को उनके इलाज के लिए आर्थिक सहायता देने की मांग की है।



उन्होंने इस घटना की गम्भीरता तथा पीड़ित परिवारों के प्रति समवेदना की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय और सामुदायिक स्तर पर अब प्राथमिकता यही होनी चाहिए कि पीड़ितों को न्याय और सांत्वना मिले तथा इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोकने के ठोस कदम उठाये जाए ताकि ऐसे हमलों को अंजाम देने वालों के मनोबल को तोड़ा जा सके।

आखिर में उन्होंने कहा कि आतंकवाद के मामलों में न्याय प्रक्रिया तीव्र और प्रभावी होनी चाहिए ताकि समाज में भय का वातावरण निर्मित न हो और दोषियों एवं उनके सहयोगियों के खिलाफ उच्च स्तरीय जांच कराकर कड़ी से कड़ी सजा, यहाँ तक कि सार्वजनिक फाँसी दी जानी चाहिए, ताकि भविष्य में कोई भी आतंकी ऐसी घटना को अंजाम देने का साहस न कर सके।

दिल्ली विस्फोट: देश शोक और आक्रोश में,, वरिष्ठ नेता विनोद इलाहाबादी ने कहा - "यह हमला पूरे देश के दिल पर प्रहार है और आतंक के विरुद्ध निर्णायक लड़ाई अब अनिवार्य हो गई है"

अगर केंद्र सरकार नगर निगम कर्मियों को मौका दे, तो हम न केवल कश्मीर, बल्कि पूरे देश से आतंक और आतंकवादियों का सूपड़ा साफ करने को तैयार हैं।"

आगरा, संजय सागर सिंह। देश की राजधानी दिल्ली में हुए भयावह बम ब्लास्ट में मारे गए निर्दोष नागरिकों की दिवंगत आत्माओं की शांति और घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना के लिए देशभर में भावपूर्ण श्रद्धांजलि सभा आयोजित की जा रही है। इस दुःख की घड़ी में उत्तर प्रदेश के स्थानीय निकाय कर्मचारी महासंघ आगरा के वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष विनोद इलाहाबादी ने दो मिनट का

मौन रखकर शोक व्यक्त किया और मृतकों के परिजनों के प्रति गहरी संवेदना जताई।

उत्तर प्रदेश स्थानीय निकाय कर्मचारी महासंघ आगरा के वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष विनोद इलाहाबादी ने भयावह बम ब्लास्ट की दुःखद घटना पर गहरा आक्रोश प्रकट करते हुए कहा कि यह हमला पूरे देश के दिल पर प्रहार है। निर्दोष नागरिकों की इस त्रासदी ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। इस घटना ने यह साबित कर दिया है कि आतंकवाद के खिलाफ अब निर्णायक लड़ाई का समय आ चुका है। यह हमला पूरे देश के दिल पर आघात है और आतंक के विरुद्ध



निर्णायक लड़ाई अब अनिवार्य हो गई है। अगर केंद्र सरकार नगर निगम कर्मियों को मौका दे, तो हम न केवल कश्मीर, बल्कि पूरे देश से आतंक और आतंकवादियों का सूपड़ा साफ करने को तैयार

हैं। उन्होंने देश की एकता, शांति और आतंकमुक्त भारत की संकल्पना को साकार करने का प्रण लिया।

उन्होंने केंद्र सरकार से मांग की कि बम ब्लास्ट में मारे गए प्रत्येक व्यक्ति के परिजनों को एक-एक करोड़ रुपये का मुआवजा और गंभीर रूप से घायलों को उच्च स्तरीय इलाज के साथ 50 लाख रुपये की सहायता दी जाए। दोषियों और उनके सहयोगियों के खिलाफ उच्च स्तरीय जांच कराकर कड़ी से कड़ी सजा, यहाँ तक कि सार्वजनिक फाँसी दी जानी चाहिए, ताकि भविष्य में कोई भी आतंकी ऐसी घटना को अंजाम देने का साहस न कर सके।

दिल्ली धमाका: देश स्तब्ध, वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान ने जताया गहरा शोक, कहा - इस कठिन समय में हमारी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं सभी पीड़ित परिवारों के साथ

यह पूरे देश के लिए अत्यंत दुखद और पीड़ादायक क्षण - निर्दोष नागरिकों पर इस तरह का हमला मानवता के विरुद्ध : वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान

आगरा। वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान ने इस वीभत्स घटना पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि यह सिर्फ दिल्ली नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए अत्यंत दुखद और पीड़ादायक क्षण है। निर्दोष नागरिकों पर इस तरह का हमला मानवता के विरुद्ध है। इस कठिन समय में हमारी

संवेदनाएं और प्रार्थनाएं सभी पीड़ित परिवारों के साथ हैं।

उन्होंने आगे कहा कि राजधानी दिल्ली के लाल किले के पास मेट्रो स्टेशन की पार्किंग में हुए भीषण बम धमाकों ने पूरे देश को दहला दिया है। इस हृदयविदारक घटना में दो दर्जन से अधिक निर्दोष लोगों की मौत हो गई, जबकि अनेक लोग गंभीर रूप से घायल होकर विभिन्न अस्पतालों में ज़िंदगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहे हैं। उन्होंने केंद्र और राज्य सरकार से मांग की कि



मृतकों के परिजनों को उचित मुआवजा दिया जाए तथा घायलों के इलाज के लिए पूर्ण आर्थिक सहायता

सुनिश्चित की जाए। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसे कुत्तों के खिलाफ देश को एकजुट होकर आतंकवाद की जड़ें खत्म करनी होंगी।

उन्होंने मृतकों की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा और घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना की। यह घटना ने केवल दिल्ली बल्कि पूरे देश के लिए एक दर्दनाक सबक छोड़ गई है कि आतंकवाद के खिलाफ एकजुटता ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है।

वर्ग 6 से 8 के गणित एवं विज्ञान विषय के पीबीएल आधारित एमआईपी के सफल क्रियान्वयन हेतु डायट रामबाग में प्रखण्ड स्तरीय टेक्निकल टीम के लिए आयोजित हुई एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यशाला

परिवहन विशेष न्यूज

राज्य में गणित एवं विज्ञान विषय शिक्षण को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से कक्षा 6 से 8 की पाठ्य पुस्तक के पाठ आधारित प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा रहा है। जिला स्तर पर प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन हेतु डीपीओ एएसएसए सुजीत कुमार दास के निदेशानुसार डायट रामबाग में गुरुवार को जिले के सभी प्रखंड से चर्चार्थित तकनीकी टीम के चार सदस्यों के लिए एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला की शुरुआत जिला शिक्षा समन्वयक मनोज कुमार एवं प्रभारी प्राचार्य डायट रामबाग आनामिका कुमारी के द्वारा संयुक्त रूप से द्वीप प्रज्वलन के माध्यम से की गई। उक्त उन्मुखीकरण कार्यशाला में प्रशिक्षक के रूप में प्राधिकृत जिला तकनीकी टीम के सदस्य सरैया प्रखंड स्थित उन्नत मध्य विद्यालय गोपालपुर नेउरा के शिक्षक अधिषेक कुमार एवं सकरा प्रखण्ड स्थित बुनियादी विद्यालय रेपुरा के शिक्षक अमितेश कुमार ने विस्तार पूर्वक प्रशिक्षण के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उक्त जानकारी देते हुए जिला टेक्निकल टीम के सदस्य सह मुरौल प्रखण्ड स्थित प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू के प्रधान शिक्षक केशव कुमार ने कहा कि शनिवार को पूरे जिले के सभी प्रखण्ड स्थित मध्य विद्यालय के गणित एवं विज्ञान विषय के नामित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को जिला स्तर से प्रशिक्षित प्रखण्ड तकनीकी टीम के सभी चार सदस्य बीआरसी स्तर पर निर्धारित स्थल पर प्रशिक्षित करेंगे। उक्त प्रशिक्षण का जिला स्तरीय तकनीकी टीम के सदस्य केशव कुमार, पप्पू कुमार पंकज, अधिषेक कुमार, अमितेश कुमार, मो. इम्तियाज अहमद एवं मो. शोएब के द्वारा अनुश्रवण एवं तकनीकी अनुसंधान प्रदान किया जाएगा।

एक गीत : अपनापन

कहाँ किसी का प्रणय निवेदन
कहाँ तुम्हारी मधु चितवन
कहाँ किसी का खल प्रदर्शन
कहाँ तुम्हारा अपनापन

बेशक हो वह युग की रम्भा
या मधुपुर की लाल परी
सुन्दरता की रूपराशि या
ही ऋतुपति की रति उतरी

कुछ ने स्वार्थ साधकर मुझपर
तीखे तीर चलाए पर
हरा न पाए निर्मल मन को हार गया
पर दूषित तन

प्रिये! तुम्हारे सिवा न भायी
फूलों सी शहजादी भी
इसीलिए सीपी है तुमको
जीवन की आजादी भी

जिनके सम्मोहन का जादू
उच्चाटन पर भारी था
उन्से भारी पड़ा तुम्हारा
बिना बनावट बाँकापन

जब से यह संकल्प लिया था
बाँह पकड़ कर चलने का
कोई भी विषवास न टूटा
अनुबन्धों को छलने का

आतीं हैं मन की उड़ान में
कई तिलवर्णों अपनी सी
लेकिन मिलता नहीं किसी में
तुम सा अपना अपनापन

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"

विश्व गुरु बनने से पहले, अच्छा विद्यार्थी बनें - अंकुर शरण

प्रिय साथियों,
आज जब हम "विश्व गुरु भारत" बनने की बात करते हैं, तो सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि विश्व गुरु बनने से पहले हमें एक अच्छा विद्यार्थी बनना होगा। जब तक हम स्वयं को समझना और अनुशासन में रहना नहीं सीखेंगे, तब तक किसी और को दिशा नहीं दे सकते।

मैंने अक्सर देखा है कि जब हम दूसरों पर निर्भर होना शुरू कर देते हैं—चाहे भावनात्मक रूप से या तकनीकी रूप से—तो हम अपने आप से दूर होते चले जाते हैं। आज मोबाइल की दुनिया में हम इतने खो गए हैं कि हमारे बीच कोई "बीच वाला रिश्ता" ही नहीं बचा। अब किसी के आने-जाने से फर्क नहीं पड़ता, और रिश्तों की मिठास कहीं खो सी गई है। दरअसल, इसका कारण कोई और नहीं—हमारी सिकुटी हुई बुनियाद है।

आज ईवीएम का जिन्न...!

होकर खिन्न निकलेगा ईवीएम का जिन्न, वोट चोरी का इन्जाम होगा ही मतभिन्न। हार के चुनाव आयोग पे उठाएंगे सवाल, विपक्षी प्रेसवातां कर खूब करेंगे बवाल।

कटघर में 'एस आई आर' भी होगा दोषी, योजनाएँ चुराकर 'सत्ता' की हैं मदहोशी। दस हजारों डीबीटी 'महिलाएँ' हुई स्वीटी, वोटिंग में आई अव्वल नेता बजाते सिटी।

अरे! एक बार फिर चोरी हो गई सरकार, बैलट पेपर पे चुनाव कराएँ यहीं दरकार। लोकतंत्र में 'लाटी-गोली-तमंचा' गए हार, खुश हो जाओ अपना 'जीत' गया बिहार। संजय एम तराणेकर



अगर आप रोज़ सुबह अपने काम पर जाते हैं और शाम को सुरक्षित घर लौट आते हैं, तो समझिए आप बेहद खुशनासीब हैं। हमला ही में हुए बम धमाकों में हमने देखा कि कितने घर उजड़ गए, कितनी जिंदगियाँ पलभर में बदल गईं। ऐसे में हर सुरक्षित पल, हर सांस — भगवान का दिया एक वरदान है।

अगर कभी लगे कि जीवन बेकार है या प्रेरणा नहीं बची, तो थोड़ा बाहर जाइए। उन जगहों पर जाइए जहाँ लोग वास्तव में अभाव में जी रहे हैं। देखिए वे बच्चे जो बिना जूते, बिना स्कूल बैग के भी मुस्कुरा रहे हैं; देखिए वे मजदूर जो पूरे दिन की थकान के बाद भी रोटी खाते हुए संतोष महसूस करते हैं। तब एहसास होगा — खुशी हमारे पास थी, बस हमने देखा न बंद कर दिया था।

जब आप स्वस्थ हैं, तो अपने ऊपर समय दीजिए — शरीर और मन दोनों को



शीर्षक - बाल दिवस विशेष

बाल दिवस का होगा महोत्सव विद्यालय के प्रांगण में, झूमेंगे हम सारे मिलकर ज्ञान मंदिर के प्यारे आंगन में, चाचा नेहरू जी ने शुरू किया हमारे लिए ये दिन प्यारा, भूल जाते हम इस दिन पढ़ाई—लिखाई का प्रसंग सारा।

बच्चे होते हैं मन के कोमल गुलाबों सा उनका रंग रूप, बोली उनकी मधु सी मीठी आत्मा में बसता ईश्वर अनुप, मत तुम उनपर इतना बोझा डालो वरना जाएंगे वो सूख, चहल-पहल व उखल-कूद की होती उनमें ज्यादा भूख।

बंद कर सारी काँपी किताबें बच्चे तो भई मौजों मनाएंगे, नहीं सुनेंगे आज किसी की वो खुशियों की धुन गुगुनाएंगे, खेल कूद व मनोरंजन संग थोड़ा जोर-शोर से होगा हंगामा, गुरुजन संग खेलेंगे आंख-मिचौली होगा थोड़ा ज्यादा ड्रामा।

हैंसो-हँसाओं और नाचो-गाओ एक दिन सब बच्चे बन जाओ, बचपन में जाकर फिर से बच्चों संग यादों को जीकर आओ, ज्ञान मंदिर में आज गुंजेगी चहल-पहल रआनंदर किलकारी, महक उठेगी फिर से सुन्दर रंग-बिरंगी ये प्यारी सी फुलवारी।

बच्चों को रहने दो बच्चे वो अपने आप समय से संभल जाएंगे, खुशी-खुशी वो ज़्यादा बेहतर आज से आने वाला काल बनाएंगे, बच्चों पर निर्भर करता है किसी भी राष्ट्र का भविष्य दिया, रमने दो उनमें निडरता, आत्मविश्वास व साहास के कण नित्य। - मोनिका डागा "आनंद", चेन्नई, तमिलनाडु

बाल दिवस आज



हर साल 14 नवंबर को बाल दिवस यानी के रूप में सेलिब्रेट किया जाता है। यह दिन हमारे देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को समर्पित है। 14 नवंबर के दिन पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म हुआ था। वहीं, उन्हें बच्चे बहुत प्रिय थे। नेहरू जी बच्चों को देश का भविष्य मानते थे और हमेशा उनकी शिक्षा, खुशहाली और उज्वल भविष्य के लिए काम करते रहे। यही वजह है कि उनके जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में सेलिब्रेट किया जाता है।

बाल दिवस क्यों मनाया जाता है? बाल दिवस हर साल 14 नवंबर को मनाया जाता है क्योंकि यह भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती का दिन है। नेहरू जी बच्चों से गहरा स्नेह रखते थे और उनका मानना था कि आज के बच्चे कल के भारत के निर्माता हैं। बच्चों के प्रति उनके इस प्रेम के कारण ही उन्हें प्यार से 'चाचा नेहरू' कहा जाने लगा।

भारत में पहली बार बाल दिवस कब मनाया गया था? भारत में बाल दिवस की शुरुआत 1956 में 20 नवंबर को हुई थी, जब इसे संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित यूनिवर्सल चिल्ड्रेन्स डे के रूप में मनाया जाता था। लेकिन नेहरू जी के निधन 27

मई 1964 के बाद उनकी जयंती यानी 14 नवंबर को भारत का राष्ट्रीय बाल दिवस घोषित किया गया। तब से हर साल इस दिन को बच्चों के नाम समर्पित किया जाता है।

बाल दिवस का उद्देश्य क्या है? इस दिन का मुख्य उद्देश्य है, बच्चों के अधिकारों और शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना। बाल श्रम, बाल अपराध और भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाना। बच्चों को स्नेह, प्यार और समान अवसर देना और उन्हें अपनी प्रतिभा निखारने के लिए प्रोत्साहित करना। बाल दिवस हमें यह सिखाता है कि बच्चों की हंसी, उनका खेलना-कूदना और उनका पढ़ना-लिखना ही किसी भी राष्ट्र की प्रगति का आधार है। बाल दिवस कैसे मनाया जाता है? देशभर के स्कूलों, कॉलेजों और संस्थानों में इस दिन बच्चों के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल प्रतियोगिताएँ, ड्राइंग, निबंध लेखन और विशेष कलास गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। कई जगह शिक्षकों और माता-पिता द्वारा बच्चों को तोहफे और मिठाई दी जाती है। मीडिया और सोशल प्लेटफॉर्म पर भी इस दिन बच्चों के अधिकारों से जुड़े संदेश साझा किए जाते हैं।

बचपन को अखबारों में जगह क्यों नहीं?

रविवार की सुबह बेटे प्रज्ञान को गोद में लेकर अखबार से कोई रोचक बाल-कहानी पढ़ाने की इच्छा अधूरी रह गई। किसी भी प्रमुख अखबार में बच्चों के लिए एक भी रचना नहीं थी। समाज बच्चों को पढ़ने के लिए कहता है, पर उन्हें पढ़ने को क्या देता है? यह संपादकीय हमारे समाचार पत्रों की बच्चों के प्रति उपेक्षा पर गहरी चोट करता है और मांग करता है कि समाचार पत्रों में बच्चों के लिए नियमित स्थान आरक्षित हो — ताकि बचपन शब्दों से जुड़े, संवेदना से सींचा जाए और विचारों से पल्लवित हो।

—**खंडों प्रियंका सौरभ**

रविवार की सुबह थी। मन हुआ कि बेटा प्रज्ञान गोद में आए और हम दोनों मिलकर अखबार में से कोई रोचक कहानी पढ़ें — ताकि आधुनिक स्क्रीन युग में भी शब्दों की मिठास उसे मिल सके। परंतु खेदजनक आश्चर्य हुआ कि प्रतिष्ठित अखबारों में बच्चों के लिए एक भी कहानी, चित्रकथा, या बाल संवाद उपलब्ध नहीं था। इस पीढ़े से उपाजा यह सवाल एक सामूहिक चिंतन की मांग करता है — “जब हम अपने अखबारों में बच्चों के लिए छापते ही कुछ नहीं, तो हम उनसे पढ़ने की उम्मीद किस अधिकार से करते हैं?”

बाल मनः एक रिक्त पन्ना

हमारी शिक्षा व्यवस्था, अभिभावक वर्ग और समाज तीनों ही अक्सर एक स्वर में कहते हैं कि आज के बच्चे कितने नहीं पढ़ते। वे मोबाइल, इंस्टाग्राम और गेमिंग की दुनिया में खो चुके हैं। पर कोई ये क्यों नहीं पूछता कि उन्हें क्या पढ़ने के लिए दे रहे हैं हम? अखबार, जो एक समय में हर घर की सुबह का हिस्सा हुआ करता था — अब बच्चों के लिए पूरी तरह से एक “वयस्कों का युद्धक्षेत्र” बन चुका है, राजनीति के झगड़े, नेताओं के आरोप-प्रत्यारोप, बलात्कार, हत्याएं, भ्रष्टाचार, क्रिकेट, फिल्में और योगा टिप्स। कहीं नहीं राजा की बात, हाथी की सवारी, विज्ञान की कल्पना, चाँद की कविता, और जीवन मूल्य सिखाती छोटी कहानियाँ?

जब बच्चे दिखते ही नहीं

आज के समाचार पत्रों में बच्चे सिर्फ दो तरह से “दिखते” हैं —

जब कोई बच्चा यौन हिंसा या हत्या का शिकार होता है। या जब कोई बच्चा बोर्ड परीक्षा में 99.9% अंक लाकर मीडिया का ताज बन जाता है। क्या इतने सीमित संदर्भों में बच्चे होने का अनुभव समझा जा सकता है? अखबारों ने बच्चों को समाज से अलग करके एक ऐसी चुप्पी में डाल दिया है, जहाँ उनका न तो रचनात्मक स्वर सुनाई देता है, न जिज्ञासु आंखें दिखाई देती हैं।

संपादकीय दूरदर्शिता की अनुपस्थिति

किसी भी अखबार का मुख्य उद्देश्य होता है — रसमाना को जागरूक बनाना और उसकी सोच

को दिशा देना। इ तो फिर एक पूरे समाज की नींव यानी बच्चों के लिए कोई पन्ना क्यों नहीं? क्या आज का संपादक इतना व्यस्त हो गया है कि उसे यह भी याद नहीं कि उसकी जिम्मेदारी अगली पीढ़ी तक संस्कार और विचार की मशाल पहुँचाने की भी है? एक समय में रबाल-जगतर, रबाल प्रभार, रबाल गोप्तीर, रबाल मेलर जैसे खंडों से अखबार बच्चों को भी संवाद में शामिल करते थे। आज वे या तो बंद हो गए या ऑनलाइन लिंक की बेगानी भीड़ में खो गए।

विज्ञापन और बाजारवाद का हमला

बच्चे आज अखबार के लिए ‘ग्राहक’ नहीं हैं। वे शैषू या रेफ्रिजरेटर नहीं खरीदते। इसी कारण “बाजार” की भाषा में उनकी कोई ‘विज्ञापन वैल्यू’ नहीं है। और जहाँ विज्ञापन की भाषा नीति तय करने लगे, वहाँ बचपन बेमानी हो जाता है।

रत्येक अखबार का लगभग 40% भाग विज्ञापनों से भरा रहता है — रियल एस्टेट, कपड़े, कोरिंग सेंटर, हॉस्पिटल, ब्रांडेड घड़ियाँ... कहीं भी यह नहीं दिखाता कि कोई अखबार यह पूछ रहा हो। रबच्चों को हम क्या पढ़ा रहे हैं?”

जब बाल साहित्य का विलोपन होता है

बाल साहित्य केवल मनोरंजन नहीं है — यह बच्चों को सोचने, सवाल करने, कल्पना करने और समाज से जुड़ने की प्रारंभिक पाठशाला है। एक कहानी जिसमें एक पेड़ अपने फल देता है, एक चिड़िया घोंसला बनाती है, एक बच्चा अपने



-प्रियंका सौरभ, लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार, हिसार, हरियाणा

दोस्त के साथ पशियों को पानी पिलाता है — ये सब बच्चों को मानवता का बीज देते हैं। जब ये कहानियाँ हट जाती हैं, तो वहाँ केवल ड्रामा, सनसनी, और डाटा बचता है। और यही संवेदनहीनता आने वाली पीढ़ी में पनपती है।

क्या पढ़ाई और ज्ञान सिर्फ स्कूल का काम है?

हमारे समाज ने बच्चों के ज्ञान का ठेका सिर्फ स्कूलों को दे रखा है। अखबार, जो कभी ‘घर की पाठशाला’ हुआ करता था, अब स्वयं को ‘वयस्कों की गॉसिप’ तक सीमित कर चुका है। क्या बच्चे समाचारों के योग्य नहीं? क्या विज्ञान, पर्यावरण, नैतिकता, और समाज की बातें उन्हें नहीं बताई जानी चाहिए?

यदि हम चाहते हैं कि बच्चे “समझदार नागरिक” बनें तो

हमें उन्हें शुरुआत से ही संवाद और सवालियों से जोड़ना होगा — और अखबार इसकी सशक्त जगह हो सकती है।

क्या किया जा सकता है?

साप्ताहिक ‘बाल संस्करण’ पुनः शुरू किए जाएं — हर रविवार या महीने में दो बार बच्चों के लिए विशेष खंड हो। बाल संवाद और चित्रकथाएँ हैं — जिनमें नैतिक मूल्य, विज्ञान की जिज्ञासा और समाज का परिचय हो। बच्चों की रचनाएँ छापें जाएं — कविताएँ, चित्र, सवाल, विचार। बाल पत्रकारिता को बढ़ावा दिया जाए — विद्यालय स्तर पर बच्चों से लिखावटा जाए, जो

छपे भी। प्रेरणादायक ‘बच्चों के नायक’ दिखाए जाएं — जो स्क्रीन के बाहर ही उपलब्ध हों।

बेटा प्रज्ञान उस दिन सुबह मुझसे बोला — माँ, क्या आपके अखबार में बच्चों के लिए कुछ नहीं होता?

मैं चुप रह गई। ये चुप्पी सिर्फ एक माँ की नहीं, एक पूरे समाज की चुप्पी है। और जब अखबार समाज का दर्पण होते हैं, तो इस दर्पण में प्रज्ञान जैसे लाखों बच्चों की मासूम जिज्ञासा को जगह मिलनी ही चाहिए। यदि हम चाहते हैं कि कल के भारत में पाठक, लेखक और संवेदनशील नागरिक जन्म लें —

तो आज के समाचार पत्रों में प्रज्ञान के लिए भी एक पन्ना आरक्षित करना होगा।

काँप-30 सम्मेलन और विकसित देशों की जिम्मेदारियाँ।

12 दिसंबर 2015 को फ्रांस के पेरिस शहर में आयोजित ‘काँप-21’ यानी संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एक ऐतिहासिक अंतरराष्ट्रीय संधि की गई थी, तथा जिसे विश्व के 195 देशों ने अपनाया था, और इस समझौते को ही पेरिस जलवायु समझौता, 2015 के नाम से जाना जाता है। पाठकों को बताता च्लू कि इस जलवायु समझौते के अंतर्गत औद्योगिक युग से पहले की तुलना में वैश्विक तापमान वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस से कम और प्रयास करके 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखने का लक्ष्य रखा गया था। इतना ही नहीं, इसके अलावा इसके तहत प्रत्येक देश को अपने-अपने स्तर पर ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन घटाने का स्वीच्छक लक्ष्य तय करने और समय-समय पर उसे अपडेट किए जाने की भी बात कही गई थी। साथ ही, इसी समझौते के अंतर्गत वित्तीय सहयोग की भी बात कही गई थी कि विकसित देश, विकासशील देशों को जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए हर साल 100 अरब डॉलर की सहायता देंगे। न केवल वित्तीय सहयोग बल्कि अनुकूलन और तकनीकी सहयोग की भी बात कही गई थी कि गरीब देशों को नई स्वच्छ तकनीकें अपनाने, जलवायु आपदाओं से निपटने और हरित विकास में मदद दी जाएगी। जवाबदेही और पारदर्शिता भी इसके तहत तय की गई थी। (मसलन, सभी देशों को अपने उत्सर्जन और प्रगति की रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र को नियमित रूप से देने की बात भी इस समझौते के अंतर्गत कहीं नहीं थी। बहरहाल, यदि हम यहां पर संक्षेप में कहें तो पेरिस समझौते का मकसद पूरी दुनिया को एकजुट करके ऐसा ढांचा बनाना था, जिससे धरती के तापमान को नियंत्रित रखा जा सके, पर्यावरण आपदाओं को कम किया जा सके, और सतत विकास को बढ़ावा मिले। इस बार आयोजित किए जा रहे सम्मेलन का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वैश्विक स्तर पर प्रतिबद्धों को लागू करना है, लेकिन इस समझौते में जताई गई प्रतिबद्धताओं के अनुरूप प्रयास होते नजर नहीं आ रहे हैं। कहना गलत नहीं होगा कि आज विकासशील देश ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कम करने की दिशा में प्रयास करना चाहते हैं, वे हरित ऊर्जा की ओर अप्रसर होना चाहते हैं, तथा धरती और पर्यावरण को अच्छा व सुंदर बनाने के लिए प्रतिबद्ध नजर आते हैं लेकिन यह भी एक कड़वा सच है कि आज वित्तीय और तकनीकी चुनौतियाँ उनकी राह में रोड़े अटक रही हैं। इसके बावजूद अच्छी बात यह है कि भारत और चीन जैसे देश पेरिस

समझौते के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए अपनी जिम्मेदारी निभाने की कोशिश कर रहे हैं। कहना गलत नहीं होगा कि भारत और चीन दोनों ने पेरिस समझौते के तहत अपने-अपने लक्ष्यों की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है। जहाँ भारत अपने हरित ऊर्जा निवेश को तेजी से बढ़ा रहा है, वहीं चीन ने भी अक्षय ऊर्जा और इलेक्ट्रिक वाहनों में भारी निवेश किया है। यहां पाठकों को बताता च्लू कि भारत ने यह वादा किया था कि 2030 तक अपनी कुल ऊर्जा का 50% हिस्सा गैर-जीवाश्म स्रोतों (जैसे सौर, पवन, जल) से प्राप्त करेगा। इतना ही नहीं, भारत ने 2030 तक उत्सर्जन तीव्रता (जीडीपी प्रति इकाई उत्सर्जन) को 2005 के स्तर से 45% तक घटाने का लक्ष्य रखा था। क्या यह काबिले-तारीफ बात नहीं है कि भारत ने 2070 तक नेट-जीरो उत्सर्जन हासिल करने की घोषणा की है। वास्तव में यह हमें गौरवान्वित महसूस कराता है कि आज भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा अक्षय ऊर्जा उत्पादक है और सौर ऊर्जा में भारत ने 2024 तक 70 जीडब्ल्यू से अधिक क्षमता हासिल कर ली है, जो एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। वहीं दूसरी ओर यदि हम यहां पर चीन की बात करें तो चीन ने 2030 तक कार्बन उत्सर्जन को चरम पर पहुंचाने और 2060 तक नेट-जीरो लक्ष्य हासिल करने की घोषणा की है। इतना ही नहीं, चीन ने 2020 के बाद कोयले पर निर्भरता घटाने और हरित प्रौद्योगिकियों में निवेश बढ़ाने पर जोर दिया है, लेकिन यहां भारत को यह ध्यान में रखना चाहिए कि चीन अक्षय ऊर्जा, विशेषकर सौर और पवन ऊर्जा उत्पादन में दुनिया में सबसे आगे है। एक बात और, साल 2025 तक चीन की ऊर्जा खपत में गैर-जीवाश्म स्रोतों की हिस्सेदारी 20% से अधिक करने का लक्ष्य है, जो लगभग पूर्ण हो चुका है। बहरहाल, यहां कहना चाहिए कि आज के समय में विकासशील देशों की कोप (सीओपी) सम्मेलनों में भूमिका अब कहीं अधिक प्रभावशाली और रचनात्मक हो गई है। इन देशों ने यह दिखाया है कि जलवायु परिवर्तन सिर्फ विकसित देशों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि सभी की साझा चुनौती है। भारत, चीन, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों ने हरित ऊर्जा, कार्बन उत्सर्जन में कमी, और सतत विकास की दिशा में ठोस कदम उठाए हैं। भारत ने सौर ऊर्जा और ग्रीन हाइड्रोजन मिशन जैसे कार्यक्रमों से उदाहरण पेश किया है, जबकि चीन अक्षय ऊर्जा में सबसे बड़ा निवेशक बन गया है। ये देश यह भी लगातार मांग कर रहे हैं कि विकसित देश अपने वित्तीय और तकनीकी सहयोग के वादे पूरे करें,

ताकि गरीब और विकासशील राष्ट्र जलवायु संकट से निपट सकें। इस तरह, कोप में विकासशील देशों की भूमिका अब केवल भागीदार नहीं, बल्कि नीति-निर्माण में नेतृत्वकारी बनती जा रही है। पाठकों को बताता च्लू कि हाल ही में जलवायु परिवर्तन पर शुरू हुई ‘संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन’ की 30वीं वार्षिक बैठक में इन दोनों देशों की परिवर्तनकारी भूमिका की सराहना की गई। साथ ही, यह बात कही गई है कि इन देशों ने जलवायु कार्रवाई को स्पष्ट तरीके से अपनाया है और वे दुनियावासी में स्वच्छ प्रौद्योगिकियों की लागत कम करने में मदद कर रहे हैं। वास्तव में, पेरिस समझौते के तहत विकसित देशों ने वादा किया था कि वे जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए विकासशील देशों को धन और तकनीक से मदद करेंगे। लेकिन संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट बताती है कि यह मदद लगातार घटती ही जा रही है—साल 2023 में केवल केवल 26 अरब डॉलर मिली, जबकि जरूरत 265 अरब डॉलर सालाना की है। विकसित देशों ने अपने वादे पूरे नहीं किए, शायद क्योंकि उन्हें इसमें अपना लाभ नहीं दिखता। कहना गलत नहीं होगा कि विकसित देश सीओपी सम्मेलनों में अपनी प्रतिबद्धताओं, विशेषकर जलवायु वित्त और उत्सर्जन में कमी के लक्ष्यों से, मुख्य रूप से आर्थिक हितों, घरेलू राजनीतिक दबावों और ऐतिहासिक जिम्मेदारी से बचने के कारण पीछे हट रहे हैं। जबकि सच यह है कि सबसे ज्यादा प्रदूषण वही करते हैं। दरअसल, विकसित देशों ने औद्योगीकरण और उच्च उपभोग स्तर ने ऐतिहासिक रूप से ग्रीनहाउस गैसों और अन्य प्रदूषकों के उत्सर्जन में सबसे अधिक योगदान दिया है। इसके अतिरिक्त, विकसित देशों में प्रति व्यक्ति उत्सर्जन (विशेषकर परिवहन, उद्योग और ऊर्जा उत्पादन आदि क्षेत्रों में) भी अक्सर अधिक होता है। चूंकि, विकसित देशों के पास प्रदूषण नियंत्रण प्रौद्योगिकियों में लगातार निवेश करने, स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों को अपनाने और प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों को लागू करने के लिए अधिक आर्थिक संसाधन और तकनीकी क्षमताएं, कोशल आदि उपलब्ध होती हैं, इसलिए विकासशील देशों की मदद करना उनकी नैतिक जिम्मेदारी बनती है। अतः अक्सर उत्सर्जन घटाने की दिशा में ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। भारत ने सौर ऊर्जा और ग्रीन हाइड्रोजन मिशन जैसे कार्यक्रमों से उदाहरण पेश किया है, जबकि चीन अक्षय ऊर्जा में सबसे बड़ा निवेशक बन गया है। ये देश यह भी लगातार मांग कर रहे हैं कि विकसित देश अपने वित्तीय और तकनीकी सहयोग के वादे पूरे करें,

सुनील कुमार महला, प्रीलांस राइटर, कलामिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

हमने चाँद छुआ, पर बचपन की मिट्टी खो दी

एक सदी बाद जब कोई पुरातत्वविद् हमारे शहरों की मिट्टी उलटेंगे, तो उसे एक अजीब-सा दृश्य दिखेगा। जमीन के नीचे दबे लाखों प्लास्टिक के खिलौने, टूटे स्मार्टफोन, और एक मोटी धूल भरी फाइल — जिसके कवर पर लिखा होगा ‘बाल दिवस 2025 — भाषण, नारे, तस्वीरें’। पर वह फाइल खोलेंगे तो पन्ने अपने आप खुलेंगे, उनमें कोई बच्चे की हँसी नहीं बचेगी। यह हैरान होकर पूछेंगे — “इतनी समृद्ध सभ्यता, इतनी तकनीक, फिर भी ये लोग हर साल एक दिन बच्चों को याद करने के लिए मजबूर थे?” यह सवाल भी हमारे कानों में गूँज रहा है। अभी वक्त है। अभी हम बदल सकते हैं। अभी हम यह तय कर सकते हैं कि आने वाली सदी को भाषणों की धूल भरी फाइल न मिले, बल्कि जीवंत बचपनों की चमक मिले।

जब किसी बच्चे की आँखों में सपनों की चमक उभरती है, तो वह सिर्फ एक मासूम मुस्कान नहीं होती — वह आने वाले कल की धड़कन होती है। उसकी खिलखिलाहट में वह ऊर्जा होती है जो किसी भी समाज की दिशा बदल सकती है। 114 नवंबर को हम बाल दिवस मनाते हैं, क्योंकि यह पंडित जवाहरलाल नेहरू की जन्म जयंती है। लेकिन यह सिर्फ चाचा नेहरू को श्रद्धांजलि नहीं है। यह उस विचार का जश्न है जो कहता है — “बच्चे देश की आत्मा हैं।” नेहरू जी जानते थे कि यदि बच्चों की सोच स्वतंत्र होगी, तो देश की सोच भी स्वतंत्र होगी। शिक्षा उनके लिए पाठ्यपुस्तक नहीं, जीवन जीने की कला थी। आज जब स्कूलों में गुब्बारे उड़ते हैं, तो यही सवाल पूछना चाहिए — क्या हम उस विचार को जी रहे हैं, या सिर्फ उसका नाम ले रहे हैं?

आज का बच्चा दो भाषाएँ जन्म से बोलता है — माँ की लोरी और एल्गोरिदम की धुन। दुनिया का ज्ञान उसकी उंगलियों पर है, लेकिन हम उसे सिर्फ डेटा का भंडार बना रहे हैं या समझ दे रहे हैं? एक तरफ डिजिटल इंडिया, दूसरी तरफ डिजिटल डिवाइड। हमने स्मार्टफोन थमा दिया, पर नीली स्क्रीन से बचाने वाला मानसिक स्वास्थ्य नहीं। गाँव की लड़कियाँ सूरज को छूना चाहती हैं, पर उनके स्कूल में टॉयलेट नहीं। हम अंतरिक्ष में झंडा गाड़ रहे हैं, पर जमीन पर लाखों बच्चियाँ शौचालय की अभाव में कंधे झुकाए देती हैं। शहरों में हैंचूची इमारतें हैं, खेल के मैदान गायब। पार्कों की जगह पार्किंग। बच्चे कंक्रीट के जंगल में लुका-छिपी खेलते हैं जहाँ छिपने की जगह नहीं, भागने की नहीं। हम उन्हें मॉल की कंडीशर्ड हवा में “आउटडोर” का झूठा अहसास देते हैं, फिर हैरान होते हैं कि डायबिटीज दस साल की उम्र में दस्तक दे रही है।

शिक्षा को बल करते हैं, पर सिखाते क्या हैं? रटें, रैक, रिजल्ट। असफलता से उठना नहीं सिखाते। यलती करना अपराध नहीं, प्रयोग है — यह नहीं बताते। करुणा जीवन का अपरिपट्टि



सिस्टम है — यह नहीं समझाते। नतीजा, टॉप रैंक वाला बच्चा एक मार्क कम आने पर आत्महत्या कर लेता है। हमने जीतना सिखाया, हार संभालना नहीं। करियर बनाना सिखाया, जिंदगी जीना नहीं। बचपन कोई उम्र नहीं, अवस्था है — जिसमें सवाल करने की हिम्मत हो, गलत होने का डर न हो, अंतर ही में जादू दिखे। हमने होमवर्क, ट्यूशन और परफेक्शन के बोझ तले दबा दिया। अब वक्त है बोझ हटाने का, आकाश वापस देने का।

बच्चे केवल भविष्य के नागरिक नहीं, वर्तमान के शिक्षक भी हैं। उनकी जिज्ञासा हमें प्रश्न पूछना सिखाती है, मासूमियत सच्चाई की कीमत बताती है, उत्साह याद दिलाता है कि जीवन लक्ष्य पाने का नाम नहीं, अनुभव करने की प्रक्रिया है। नेहरू जी ने कहा था, “हम अपने बच्चों को वह जीवन दें जो भय से मुक्त हो।” आज यह वाक्य और प्रासंगिक है। जब समाज तनाव, हिंसा और असमानता से भरा हो, तब बच्चों के मन को सुरक्षित रखना ही सबसे बड़ा राष्ट्रनिर्माण है। लाखों बच्चे अभी भी मजदूरी के औजार थामे हैं, पेट की भूख से लड़ते हैं। बाल दिवस का असली अर्थ तभी पूरा होगा जब यह अंतर मिटेगा — जब हर बच्चा, गाँव का हो या शहर का, अमीर हो या गरीब, शिक्षा और सम्मान का हकदार बनेगा।

असली क्रांति तब होगी जब स्कूल की दीवारें गिरेंगी। जब किसान का बेटा खेत में कैमिस्ट्री सीखेगा, मछुआरों की बेटे लहरों से फिजिक्स। जब कूड़ा बीनने वाला बच्चा रोसाइलिंग का बिजनेस मॉडल बना लेगा। तब नवाचार लैब में नहीं, जिंदगी की मजबूरी में जन्म लेगा। तब IQ से ज्यादा AQ (एडेप्टिविटी) कोशट/अनुकूलन क्षमता) महत्वपूर्ण होगी। हमें बच्चों को केवल अच्छे अंक नहीं, अच्छा इंसान बनने की दिशा देनी है। सफलता

का अर्थ प्रतिस्पर्धा में आगे निकलना नहीं, समाज में कुछ अच्छा जोड़ना है। यदि हर बच्चा संवेदना, दया, सृजन और सत्य को पहचान ले, तो भारत का भविष्य चमत्कार से कम नहीं होगा।

यह बाल दिवस कोई त्योहार नहीं, अलार्म है। अंतर हम अभी नहीं चेंते, तो आने वाली पीढ़ी हमें माफ नहीं करेगी। वह नहीं पूछेगी कितनी जीडीपी बढ़ाई। पूछेगी — “तुमने हमारे लिए कौन सा आकाश बचाया?” यह दिन संकल्प का दिन है। संकल्प कि दस साल में हर बच्चे को गुणवत्ता शिक्षा मिलेगी, हर गाँव में मुफ्त इंटरनेट वाली लाइब्रेरी होगी, लड़कियों को साइंस लैब में बराबर हक मिलेगा। हम बच्चे को उपभोक्ता नहीं, सृजनकर्ता बनाएँगे। जब प्लास्टिक फेंकते हैं, याद रखें — वह समुद्र में पहुँचकर किसी बच्चे के भविष्य को निगल जाएगा। जब रिश्ते टूटते हैं, याद रखें — उस पैसे से कोई स्कूल बन सकता था।

आज रात अपने भीतर के बच्चे से पूछिए — “तुम खुश हो?” अगर जवाब हाँ नहीं, तो सुबह कुछ बदल डालिए। क्योंकि बच्चे बाहर नहीं, हमारे भीतर हैं। जब तक हमारा अपना बचपन जिंदा है, कोई बच्चा अकेला नहीं रहेगा। इस बाल दिवस पर नया प्रण लें — किसी भी बच्चे की मुस्कान को परिस्थितियों की धूल में खोने न दें। हर बच्चे को सपने देखने की जगह, सोचने की आजादी, गिरने के बाद उठने का साहस दें। क्योंकि जब एक बच्चा खिलता है, तभी समाज महकता है। और जब हर बच्चे की आँखों में सपना नहीं, उस पूरा करने का हीसला होगा, तभी पुरातत्वविद् को भाषणों की फाइल नहीं, एक जीवंत सभ्यता की कहानी मिलेगी — जिससे बच्चों को सिर्फ याद नहीं किया, बल्कि उनके लिए जीया।

प्रो. आरके जैन “अरिजीत”, बड़वानी

व्हाइट कॉलर टेरर माँड्यूल क्या है? दुनिया इससे कितनी प्रभावित है? भारत इससे कैसे बच सकता है?

कमलेश पांडेय
व्हाइट कॉलर टेरर माँड्यूल संगठित अपराध का नया और बेहद खतरनाक रूप है, जिसमें डॉक्टर्स, इंजीनियर्स, अध्यापक, प्रोफेशनल्स और अभिजात्य वर्ग के लोग आंतक की लॉजिस्टिक्स, फंडिंग, गुप्त संगठन और तकनीकी सहायता का काम करते हैं, जबकि सामने उनका समाज में सम्मानित और बेदाग चेहरा रहता है। यह खतरा आज न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में बढ़ रहा है और इसकी पहचान तथा रोकथाम बहुत बड़ी चुनौती बन चुकी है।

जानिए व्हाइट कॉलर टेरर माँड्यूल क्या है?

व्हाइट कॉलर टेरर माँड्यूल ऐसे पेशेवर और पढ़े-लिखे लोग चलाते हैं जिन पर आमतौर पर शक नहीं होता। इनका काम सीधे आतंकवादी हमला करना नहीं बल्कि फंडिंग, लॉजिस्टिक सपोर्ट, रिक्रूटमेंट, गुप्त संचार और तकनीकी सहायता देना है। हाल ही में दिल्ली और एनसीआर में ऐसे मामले सामने आए हैं, जहाँ डॉक्टर और मेडिकल स्टूडेंट्स ने बम, बिस्फोटक, शस्त्र, और हाई-टेक उपकरण छुपाकर आतंक की संगठनों की मदद की। खुफिया मामलों के जानकारों के मुताबिक, हवाला, एनक्रिप्टेड कम्यूनिकेशन ऐप्स, और सामाजिक/धार्मिक संगठनों की आड में इन्हें

फंडिंग व नेटवर्किंग मिलती है।

समकालीन दुनिया व्हाइट कॉलर टेरर माँड्यूल से कितनी प्रभावित है?

वैश्विक स्तर पर बड़े आतंक संगठनों ने अब सीधे हमलावर भेजने के बजाय स्थानीय पढ़े-लिखे लोगों और पेशेवरों के जरिए अपने नेटवर्क फैलाने शुरू कर दिए हैं जिससे सुरक्षा एजेंसियों के लिए इन्हें पकड़ पाना बेहद जटिल हो गया है।

आतंकी माँड्यूल की यह ‘भेस बदलकर घुसपैट’ यूरोप, अफ्रीका, और एशिया सहित कई क्षेत्रों में देखने को मिल रही है जिसमें धन शोधन और नकली चैरिटी के माध्यम से फंडिंग होती है। इन माँड्यूल्स की पकड़ लोकल यूनिवर्सिटीज, अस्पताल, धार्मिक संगठन और पेशेवर सोशल नेटवर्क तक फैल गई है, जिससे सुरक्षाविशाल सुरक्षा जांच भी प्रभावित हो रही है।

आदिपर भारत इससे कैसे बच सकता है?

नागरिक समाज और पेशेवर समूहों को सतक और जागरूक बनाना बेहद जरूरी है। हर संदिग्ध गतिविधि की सूचना पुलिस, एनआईए या साइबर क्राइम पोर्टल पर तुरंत दें। वहीं, सुरक्षा एजेंसियों को अब केवल ‘परंपरागत’ आतंकवादियों तक सीमित न रहकर कॉलेज-यूनिवर्सिटी, अस्पताल, प्रफेशनल कॉम्युनिटी में ‘काउंटर-रेडिकलाइजेशन’ अभियान और डिजिटल मॉनिटरिंग तेज करनी होगी। बेहतर होगा कि

यूरोपीय देश फ्रांस की तरह ‘प्रिवेंट टू प्रोटेक्ट’ जैसी स्कीम लागू की जा सकती है, जिसमें शिक्षा, सोशल, सुरक्षा व जेल व्यवस्था को सर्वात्मित कर चरमपंथी विचारधारा की रोकथाम और नेटवर्क की पहचान की जाए।

इसके अलावा, डिजिटल और सोशल मीडिया मॉनिटरिंग तथा फेक एनजीओ/सोशल-चैरिटी के वित्तीय लेन-देन पर खास नजर रखना जरूरी है। वहीं, ऑड-प्रोफेशनल्स या पढ़े-लिखे संदिग्धों के लिए संवेदनशील स्थानों, संगठनों में वैरिफिकेशन, साइबर मॉनिटरिंग और अंडरकवर इन्फॉर्मेशन नेटवर्क तेज किए जाएं। इन उपायों के जरिये ही भारत इस नए और बेहद मुश्किल आतंकवादी खतरे से अपनी सुरक्षा कर सकता है, क्योंकि अब युद्ध बंटकधारियों और आतंकवादियों से ज्यादा, ‘सूट-बूट’ वालों के जरिए लड़ा जा रहा है।

व्हाइट कॉलर टेरर माँड्यूल के सामान्य संकेतों को ऐसे समझिए

व्हाइट कॉलर टेरर माँड्यूल के सामान्य संकेतों में ये प्रमुख पहलू होते हैं: पहला, ऐसे पेशेवर और पढ़े-लिखे व्यक्ति जो आमतौर पर सम्मानित होते हैं जैसे डॉक्टर, इंजीनियर,



शिक्षक, जो अचानक कट्टरपंथी विचार धारा अपना लेते हैं।

दूसरा, सोशल मीडिया, डिजिटल चैनल्स और एनक्रिप्टेड संचार माध्यमों का उपयोग कर गुप्त रूप से फंडिंग, हथियार और बिस्फोटक सामग्री की खरीद-फरोख्त करते हैं। तीसरा, सामाजिक या धार्मिक संस्थाओं के आड में छुपकर संदिग्ध गतिविधियों को अंजाम देते हैं। जैसे सुरक्षा बलों को धमकी देना या स्थानीय लोगों को सुरक्षा सहयोग से रोकना। चतुर्थ, सामान्य जीवन में कोई संदिग्ध व्यवहार नहीं दिखाते, लेकिन अचानक आंतरिक घुसपैट और आतंकी गतिविधियों में संलिप्त हो जाते हैं।

पंचम, अचानक किसी पेशेवर या छात्र समूह में कट्टरपंथी विचारों का प्रभाव फैलाना, खुद को ऑनलाइन या ऑफलाइन तेजी से रेडिकलाइज

करना। षष्ठम, बड़े हमलों के लिए लॉजिस्टिक सपोर्ट, बिस्फोटक, हथियारों और फंड की गुप्त व्यवस्था करना। सप्तम, संदिग्धों का संदिग्ध यात्रा इतिहास (जैसे विदेश यात्रा), अतंरिक या सोशल मीडिया पर आतंकवादी प्रोपेगंडा फैलाना। इन संकेतों से सुरक्षा एजेंसियाँ शुरुआत कर स्थानीय संदिग्धों को पहचान कर पाती हैं, खासकर जब ये लोग अचानक

अपने सामाजिक व्यवहार या नेटवर्क में बदलाव दिखाने लगे। इससे साफ होता है कि यह माँड्यूल पेशेवर और प्रतिष्ठित दिखने वाले लोग होते हुए भी आतंकवाद का हिस्सा होते हैं जो बेहद खतरनाक है।

इस प्रकार, व्हाइट कॉलर टेरर माँड्यूल के संकेत पहचानना और समय रहते सतक रहना भारत की सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है। नागरिक व्हाइट कॉलर टेरर माँड्यूल के संकेतों की पहचान कर देश की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके लिए वे निम्नलिखित कदम उठा सकते हैं:- पहला, अपने आस-पास के लोगों के व्यवहार में अचानक आए बड़े बदलावों, कट्टरपंथी विचारों, और सामाजिक अलगाव को गंभीरता से लें। दूसरा, संदिग्ध गतिविधियों या गुप्त फंडिंग, हथियारों की खरीद,

या आतंकवादी प्रोपेगंडा फैलाने वाले ऑनलाइन या ऑफलाइन व्यवहार की जानकारी तुरंत पुलिस, राष्ट्रीय जांच एजेंसी या साइबर क्राइम पोर्टल पर दें।

तीसरा, पेशेवर, शिक्षाविद्, और सामाजिक समूहों में घुसपैट की आशंका होने पर सतक रहें और बदलावों की सूचना संबंधित अधिकारियों को दें। चतुर्थ, अपने परिवार, दोस्तों और समुदाय में कट्टरपंथी विचारों के खतरे के लिए संवाद और जागरूकता बढ़ाएं, ताकि युवा और पेशेवर इस तरह के जाल में न फँसें। पंचम, सामाजिक और धार्मिक संस्थानों में किसी भी तरह की संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखें और त्वरित सूचना दें। षष्ठम, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर संदिग्ध या फेक सोशल मीडिया प्रोफाइल, फंडिंग स्रोत और घुसपे पर नजर रखें और रिपोर्ट करें। सप्तम, सरकारी और रेडिकलाइजेशन से संबंधित प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लें।

निःसन्देह, इन उपायों से नागरिक अपनी सामाजिक-जिम्मेदारी निभाते हुए आतंक के खिलाफ सरकार और सुरक्षा बलों का सहयोग कर सकते हैं जिससे आतंक की जड़ों को समय रहते पकड़ा जा सकेगा और सुरक्षा मजबूत होगी और देश व देशवासी सुरक्षित रहेंगे।

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

भारत का नया वायु प्रदूषण खतरा: हम प्लास्टिक की सांस ले रहे हैं



विजय गर्ग

सर्वव्यापी माइक्रोप्लास्टिक: भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए एक अध्ययन में दिल्ली से हवा के नमूनों में हजारों छोटे प्लास्टिक कण पाए गए, यहां तक कि गर्मियों और मानसून के मौसम के दौरान भी। ये सूक्ष्म प्लास्टिक एक महत्वपूर्ण, पूरे वर्ष प्रदूषक हैं। माइक्रोप्लास्टिक के स्रोत: ये कण विभिन्न दैनिक स्रोतों से आते हैं, जिनमें कपड़ों की फाइबर, एकल उपयोग प्लास्टिक और कार टायर का पहनना शामिल है।



भारत, जो पहले से ही दुनिया के कुछ सबसे गंभीर वायु प्रदूषण से जूझ रहा है, अपने वायु गुणवत्ता संकेत का एक चिंताजनक नया आयाम सामना कर रहा है: सांस लेने योग्य माइक्रोप्लास्टिक की उपस्थिति। रश्वास लेने वाली प्लास्टिक शब्द एक ऐसे खतरा का स्पष्ट वर्णन बन गया है जो अक्सर अदृश्य होता है लेकिन संभावित रूप से स्वास्थ्य के लिए गहरे जोखिम लेकर आता है। ई सर्वव्यापी माइक्रोप्लास्टिक: भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए एक अध्ययन में दिल्ली से हवा के नमूनों में हजारों छोटे प्लास्टिक कण पाए गए, यहां तक कि गर्मियों और मानसून के मौसम के दौरान भी। ये सूक्ष्म प्लास्टिक एक महत्वपूर्ण, पूरे वर्ष प्रदूषक हैं। माइक्रोप्लास्टिक के स्रोत: ये कण विभिन्न दैनिक स्रोतों से आते हैं, जिनमें कपड़ों की फाइबर, एकल

उपयोग प्लास्टिक और कार टायर का पहनना शामिल है। **स्वास्थ्य प्रभाव** श्वास: सूक्ष्म प्लास्टिक श्वसन के माध्यम से मानव शरीर में प्रवेश कर सकता है, जिसके कण काफी छोटे होते हैं ताकि वे फेफड़ों तक पहुंच सकें। "ट्रोजन हॉर्स" प्रभाव: हवा में ले जाने वाले माइक्रोप्लास्टिक शरीर में हानिकारक रसायनों और रोगजनकों को लेकर वेक्टर के रूप में कार्य कर सकते हैं। संभावित जोखिम: अध्ययन ब्रॉन्कैटिस, फेफड़ों की सूजन और कैंसर जैसे स्वास्थ्य संबंधी संभावित खतरों को सुझाव देते हैं। इन्हें प्लेसेटो और स्तन दूध में भी पाया गया है। धूमि, शांत खतरा: चिकित्सा विशेषज्ञ इन मानव निर्मित कणों के बारे में चिंता व्यक्त करते हैं क्योंकि वे शरीर

के भीतर धीरे-धीरे कार्य कर सकते हैं। गैर-निरीक्षण और अनियंत्रित: भारत में अपशिष्ट प्रबंधन के लिए मौजूदा दिशानिर्देश वायुप्रसारित माइक्रोप्लास्टिक द्वारा उत्पन्न चुनौतियों को पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं करते हैं, जिससे वे काफी हद तक अनियंत्रित और अप्रबंधित रह जाते हैं। भारत का प्रदूषण परिदृश्य: भारत सबसे प्रदूषित देशों में से एक है, जिसमें प्लास्टिक की अपशिष्ट बहुत अधिक होती है। कलकत्ता में ईडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च (आईआईएसईआर) जैसे संस्थानों द्वारा आयोजित प्लास्टिक जलाने से वायु प्रदूषण, विषाक्त डायऑक्साइड जारी करने और जमीनी स्तर पर ओजोन बढ़ने में भी योगदान मिलता है। इन सूक्ष्म प्लास्टिक टुकड़ों पर अलार्म बज रहा है - जिनकी चौड़ाई 10 माइक्रोमीटर से कम है - जो मानव फेफड़े में गहराई तक प्रवेश करने के लिए पर्याप्त छोटी हैं। भारत में



संपादकीय

चिंतन-मजल



एयरबॉन माइक्रोप्लास्टिक के बारे में प्रमुख निष्कर्ष महत्वपूर्ण एकाग्रता: कोलकाता, दिल्ली, चेन्नई और मुंबई जैसे प्रमुख महानगरीय क्षेत्रों के वायु नमूनों का विश्लेषण करने वाले शोधकर्ताओं ने चिंताजनक स्तर दर्ज किए हैं। कोलकाता (लगभग 14 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर) और दिल्ली में सांस लेने योग्य माइक्रोप्लास्टिक की औसत एकाग्रता सबसे अधिक पाई गई थी। दैनिक श्वास: अध्ययनों से पता चलता है कि जोखिम की दर अधिक होती है। इन शहरों में व्यस्त बाजारों में आठ घंटे बिताए जाने वाले व्यक्ति प्रतिदिन सैकड़ों माइक्रोप्लास्टिक कण सांस ले सकते हैं। उदाहरण के लिए, अनुमानों से पता चलता है कि कोलकाता में प्रतिदिन 370 कण और दिल्ली में 300। मौसमी भिन्नता: विशेषकर दिल्ली में अध्ययनों से पता चला है कि गर्मियों के महीनों की तुलना में सूक्ष्म प्लास्टिक का औसत दैनिक संपर्क लगभग दोगुना हो सकता है। प्लास्टिक के स्रोत: इन वायुप्रसारित कणों का सबसे प्रचुर घटक अक्सर पॉलिएस्टर फाइबर होता है, जो मुख्यतः सिंथेटिक कपड़ों और कपड़ों से प्राप्त होते हैं। अन्य प्रमुख योगदानकर्ताओं में शामिल हैं पॉलीएथिलिन (एकरतफा पैकेजिंग से) स्टायेन-बुटाडीन रबर (वाहन टायर और जूते पहनने से) "ट्रोजन घोड़े" का खतरा: सबसे महत्वपूर्ण चिंताओं में से एक यह है कि ये छोटे प्लास्टिक कण अकेले यात्रा नहीं करते हैं। उनकी कड़वी, हाइड्रोफोबिक (जल-विरोधी) सतहें उन्हें हानिकारक पदार्थों के कॉकटेल के लिए आदर्श वाहक या ट्रेजिन घोड़े बनाती हैं। विषाक्त रसायन: सूक्ष्म प्लास्टिक के साथ घनिष्ठ धातु जैसे लीड, आर्सेनिक और क्रोमियम मिलते हैं। रोगजनकों: इन वायुप्रसारित प्लास्टिक के टुकड़ों की सतह पर बैक्टीरिया और कवक प्रजातियों का भी दस्तावेजीकरण किया गया है, जिससे बीमारी पैदा करने

वाले जीवाणुओं को सीधे श्वसन प्रणाली में ले जाने का खतरा बढ़ जाता है। स्वास्थ्य और नियामक प्रभाव जबकि अनुसंधान जारी है, माइक्रोप्लास्टिक का श्वास कई संभावित स्वास्थ्य मुद्दों से जुड़ा हुआ है, जिनमें शामिल हैं श्वसन संबंधी समस्याएं: सूजन, अस्थमा, ब्रोंकाइटिस और निर्मोचिता प्रणालीगत जोखिम: सबसे छोटे कण संभावित रूप से रक्तप्रवाह में प्रवेश कर सकते हैं, जिससे हृदय रोग और यहां तक कि दीर्घकालिक संपर्क के कारण कैंसर का खतरा भी हो सकता है। इस बढ़ते खतरों से नियामक कार्रवाई की मांग हुई है। राष्ट्रीय पर्यावरण वायु गुणवत्ता मानकों के तहत विनियमित प्रदूषकों की सूची में माइक्रोप्लास्टिक को आधिकारिक तौर पर शामिल करने के लिए केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को निर्देश दिया गया है। रश्वासने वाली प्लास्टिक की घटना इस बात पर प्रकाश डालती है कि भारत में वायु प्रदूषण का चुनौती बहुआयामी है, जो न केवल वाहन उत्सर्जन और औद्योगिक गतिविधि जैसे पारंपरिक स्रोतों से उत्पन्न होती है बल्कि प्लास्टिक उत्पाद के सर्वव्यापी उपयोग और खराब निपटान से भी आती है। इस बढ़ते खतरों से नियामक कार्रवाई की मांग हुई है। राष्ट्रीय पर्यावरण वायु गुणवत्ता मानकों (NAAQS) के तहत विनियमित प्रदूषकों की सूची में माइक्रोप्लास्टिक को आधिकारिक तौर पर शामिल करने का विचार करने के लिए केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को निर्देश दिया गया है। रश्वासने वाली प्लास्टिक की घटना इस बात पर प्रकाश डालती है कि भारत में वायु प्रदूषण चुनौती बहुआयामी है, जो न केवल वाहन उत्सर्जन और औद्योगिक गतिविधि जैसे पारंपरिक स्रोतों से आती है बल्कि दैनिक जीवन में प्लास्टिक उत्पादों के सर्वव्यापी उपयोग और खराब निपटान से भी उत्पन्न होती है।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रतिष्ठित शिक्षाविद् मलोट पंजाब - 15220

सम्मान की गरिमा

डॉ विजय गर्ग

उम्मीद लेकर हमारे पास मुस्कुराते हुए पहुंचे किसी कनिष्ठ कहे - माने जाने वाले व्यक्ति से बातचीत शुरू हो और उसे शुरूआत में ही डांट-फटकार की भाषा या सख्त लहजे में कुछ कहा जाए, तो इसका सामान्य अस्तर क्या पड़ता है? आमतौर पर होगा यही कि उस कनिष्ठ व्यक्ति का उत्साह मंद हो जाएगा और उसके चेहरे से मुस्कुराहट जाती रहेगी। उसके बाद वह बातचीत तो करेगा, लेकिन हमें वरिष्ठ मानते हुए एकतरफा तौर पर वह हमारी बात को ध्यानपूर्वक सुनेगा। इसे एक मामूली-सा उदाहरण कहा जा सकता है, लेकिन व्यवहार में इसका महत्त्व बड़ा होता है। इस तरह के असामान्य व्यवहार से किसी के कोमल मन को गहरा दुख पहुंच सकता है। वह यह सोचने पर मजबूर हो सकता है कि सामने वाला यह बात सामान्य तरीके से भी तो कह सकता था! पता नहीं, किस कारण से उसने ऐसा किया!

छोटा हो या बड़ा, हर किसी की यह दिली स्वादिष्ट होती है कि उसके साथ सम्मानजनक तरीके से बातचीत की जाए। ऐसी इच्छा रखने वाले लोग समाज में हर जगह होते हैं। चाहे घर हो या कार्यालय, सफर में हों या रेस्तरां में। एक छोटी-सी इच्छा यही रहती है कि उसे प्यार मिले, सम्मान मिले, लेकिन इसके उलट उसके साथ दुर्व्यवहार करने वाले लोग यह भूल जाते हैं कि अगर उनके साथ भी कोई दूसरा व्यक्ति ऐसा ही करे, तब उन्हें कैसा महसूस होगा। अगर कोई कनिष्ठ व्यक्ति सम्मान और प्यार की भूख रखता है, तो वरिष्ठ माने जाने वाले लोगों की तो यह स्वाभाविक इच्छा होगी?

दरअसल, सम्मान पाने की इच्छा रखने की बात सोचना कोई बुरी बात नहीं होती। अगर कोई व्यक्ति ऐसा सोचता है तो यह एक स्वाभाविक लालसा है। मगर हम सामने वाले को सम्मान नहीं दे पा रहे हैं और चाहते हैं कि हमें सम्मान मिलता रहे तो यह संभव नहीं हो पाता। एकतरफा कुछ भी लंबा नहीं



चलता। अगर हम ऊंचे पद पर बैठे हों, तो डरा-धमका कर या किसी की मजबूरी का फायदा उठा कर सामने वाले व्यक्ति से सम्मान पाते हुए दिख भी जाएं, लेकिन यह दिखावे से ज्यादा कुछ नहीं होता। यह स्थायी भी नहीं होता। जिस दिन हमारा यह पद जाएगा, सामने वाला व्यक्ति हमारा सम्मान करना बंद कर देगा। शायद इसलिए कहा जाता है कि हम इज्जत कमा सकते हैं, लेकिन किसी से छीन नहीं सकते हैं।

यों भी, इज्जत कमाना कोई आसान काम नहीं होता। इसके लिए अपने अहंकार को दरफिकार करना पड़ता है। मन को

है। उदार बनाना पड़ता है। संकुचित सोच से दूर

होना पड़ता अपनी अवधारणाओं पर विचार करना और जरूरी होने पर उसे तोड़ना पड़ता है। ये सब बातें व्यक्ति के भीतर तभी आ पाती हैं, जब उसके माता-पिता ने उसे इस तरह के संस्कार दिए हों या उसने अभ्यास कर खुद को इस तरह का बनाया हो। जो व्यक्ति ऐसा नहीं कर पाता है, उसे सामने वालों से डेरों शिकायतें रहती हैं। उसे लगता है कि मुझे वह नहीं मिल पा रहा है, जो मुझे मिलना चाहिए। हालांकि इस तरह सोचते समय वह यह ध्यान में नहीं रखता है कि वह खुद भी किसी के साथ उचित व्यवहार नहीं कर रहा है। वह अधिकारी की बात तो सोचता है, लेकिन यह भूल जाता है कि उसके कुछ कर्तव्य भी हैं। अगर हम अपने कर्तव्य को पूरा न करें और अधिकार

की ही बातें करते रहे, तो यह बेमानी हो जाता है। कई बार देखा जाता है कि लोग हमेशा समाज, कार्यस्थल, परिवार, कुटुंब या जीवन में कहीं भी ऐसे व्यक्ति को याद करते हैं, जो सद्व्यवहार वाले हों। भले ही उस व्यक्ति से किसी के हितों की पूर्ति हो पा रही हो या नहीं। वे उसके गुणों को सराहते हैं। ऐसे व्यक्ति जब संसार से चले जाते हैं या दोनों के बीच स्थान की भी दूरी हो जाती है, तब भी वे उसे याद करते हैं। सम्मान देने वाले को व्यक्ति अपने सुख और दुख, सब तरह की बात आसानी से बता देते हैं। यहां तक कि मलिक और रनोकर के बीच में भी एक दूसरे को बराबर सम्मान देने की स्थिति होती है। तो बेहतर संबंध बन जाता है और कई बार उनका रिश्ता पिता-पुत्र की तरह का हो जाता है। दूसरी ओर, दुर्व्यवहार करने वाले व्यक्ति केवल आलोचना के ही पात्र होते हैं। उन्हें मन से कोई पसंद नहीं करता है।

शिक्षक, माता-पिता, वरिष्ठ जन और समाज के गणमान्य व्यक्ति हमेशा यह कहते पाए जाते हैं कि सम्मान देने से सम्मान मिलता है। अगर किसी को कुछ 'दे नहीं सकते हो, तो कम से कम सम्मान तो दे ही दिया जाए। इसमें 'कुछ' लगता नहीं है। सिर्फ दो मीठे

बोल काफी होते हैं। और अगर इतना भी नहीं कर सकते हैं, तो कम से कम किसी के साथ दुर्व्यवहार तो नहीं ही करना चाहिए, उसके मन को कष्ट नहीं पहुंचाना चाहिए या उसका अपमान नहीं करना चाहिए। मनुष्य के भीतर एक मन होता है जो बहुत कोमल होता है। उसे सुख - दुख और अच्छाई- बुराई का अनुभव होता है। किसी व्यक्ति को दुख पहुंचाने से किसी को कोई लाभ मिलता हो, ऐसा नहीं। मगर कुछ लोगों के अहं की कैद इतनी प्रबल होती है कि वचस्व के मानस में जीते हुए इस सबाल पर सोचते भी नहीं। अगर हम किसी को सम्मान देते हैं, तो बदले में हमें सम्मान मिलता है। ऐसा करना कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

राय: बच्चों में व्यवहार परिवर्तन को समझना और प्रतिक्रिया देना



डॉ विजय गर्ग

व्यवहार परिवर्तन बच्चे के विकास का अपरिहार्य और अभिन्न हिस्सा है। बच्चे के रथयानक दोर से लेकर किशोरावस्था की भावनात्मक उतार-चढ़ाव तक, एक बच्चे की यात्रा दुनिया के साथ बातचीत करने के विकासशील तरीकों से चिह्नित होती है। हालांकि कई बदलाव विकास के सामान्य संकेत हैं, लेकिन कुछ परिवर्तन बच्चे की अपर्याप्त जरूरतों, आंतरिक संघर्ष या बाहरी दबाव के महत्वपूर्ण संकेत के रूप में कार्य करते हैं। सामान्य बनाम परिवर्तन के बारे में माता-पिता और देखभाल करने वालों के लिए विकास की विशिष्ट बाधाओं और निरंतर, समस्यग्रस्त व्यवहारों में अंतर करना आवश्यक है। सामान्य विकास परिवर्तन: इनमें अस्थायी defiance, युवा बच्चों में जो भावनात्मक स्व-नियंत्रण कौशल की कमी रखते हैं, उनमें स्वतंत्रता और

गोपनीयता की बढ़ती इच्छा तथा किशोरावस्था के दौरान मूडनेस शामिल है। ये व्यवहार चुनौतीपूर्ण होने के बावजूद अक्सर बच्चे को नई सामाजिक और भावनात्मक क्षमताएं प्राप्त होती हैं।

संभावित परिवर्तनों के बारे में: व्यवहार तब चिंता का विषय बन जाता है जब यह लगातार होता है, गंभीर हो जाता है या बच्चे के घर या स्कूल में काम करने में महत्वपूर्ण हस्तक्षेप करता है। यह लगातार आक्रामकता (लोगों या जानवरों के प्रति), प्राधिकरण का बार-बार और तीव्र विरोध (सामान्य धक्का देने से परे), सामाजिक गतिविधियों से वापसी, अकादमिक प्रदर्शन में अचानक और स्थायी गिरावट, नौद या खाने की आदतों में परिवर्तन, या अत्यधिक चिंता या दुख की अभिव्यक्ति के रूप में प्रकट हो सकता है। ये कभी-कभी चिंता, अवसाद, ध्यान विकार

हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (श या विपक्षात्मक चुनौतीपूर्ण डिस्ऑर्डर जैसे अंतर्निहित मुद्दों के प्रारंभिक संकेत हो सकते हैं। मूल कारण: सिर्फ 'अयोग्य व्यवहार' से अधिक व्यवहार परिवर्तन शायद ही कभी यादृच्छिक होते हैं; वे अक्सर संचार का एक रूप होते हैं। कारण अक्सर आंतरिक और बाहरी कारणों के संयोजन से उत्पन्न होते हैं। पर्यावरणीय तनाव: जीवन में प्रमुख परिवर्तन, सकारात्मक भी तनावपूर्ण हो सकते हैं। उदाहरणों में घर जाने, माता-पिता की तलाक, भाई-बहन का जन्म, स्कूल में छेड़छाड़ या अकादमिक दबाव में अचानक वृद्धि शामिल हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट

पत्रकारिता शिक्षा में मौन संकट : डॉ विजय गर्ग

हाल के वर्षों में पत्रकारिता शिक्षा धीरे-धीरे गहरी और बहुमुखी संकट की स्थिति में आ गई है। यह रचयु संकट समाचार कक्ष बंदियों या प्रेस स्वतंत्रता के दमन की तरह शोषकों पर हावी नहीं हो सकता, लेकिन लोकतंत्र, सार्वजनिक सूचना और मीडिया परिदृश्य के लिए इसका प्रभाव गहरा और चिंताजनक है।

1 (संकट कैसा दिखता है) कई इंटरलॉकिंग लक्षण बताते हैं कि पत्रकारिता शिक्षा गंभीर तनाव में है। अप्रचलित पाठ्यक्रम - कई पत्रकारिता कार्यक्रम अभी भी कल के न्यूज़रूम में पढ़ाते हैं: बुनियादी रिपोर्टिंग, समाचार लेखन, डिजिटल से पहले की दुनिया में नैतिकता - जबकि डिजिटल उपकरण, डेटा पत्रकारिता, एआई, मल्टीमीडिया कहानी कहने और नए व्यवसाय मॉडल मानक बन जाते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में कई स्कूल रपरंपरागत रिपोर्टिंग प्रारूपों पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखते हैं... और आधुनिक तकनीकी-बुद्धिमान न्यूज़रूम की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए खराब रूप से सुसज्जित होते हैं। कक्षाओं और न्यूज़ रूमों के बीच संबंध टूटना - स्नातक अक्सर व्यावहारिक कौशल, आधुनिक उपकरणों का अनुभव या वर्तमान पत्रकारिता गतिशीलता की समझ से रोजगार बाजार में प्रवेश करते हैं। धाना में 'शिवविद्यालयों' ऐसा काम किया है जैसे मीडिया उद्योग एक अलग ब्रह्मांड में मौजूद हो... वे ऐसे स्नातक

पैदा करते रहते हैं जो सिद्धांत पढ़ सकते हैं, लेकिन आधुनिक न्यूज़रूम के मानक पर बात नहीं कर सकते अपूर्ति-खर्च असंगतता और ब्याज में गिरावट - कुछ संदर्भों में पत्रकारिता कार्यक्रमों में बढ़ती नामांकन रोजगार बाजार की वृद्धि से मेल नहीं खाती, जबकि अन्य स्थानों पर खराब कैरियर संभावनाओं के कारण छात्र रूचि कम हो रही है। उदाहरण के लिए, कर्पूर में लक्ष्मी आधे उपलब्ध सीटें खाली हैं... पत्रकारिता शिक्षा गंभीर संकट का सामना कर रही है। ... छात्र अधिक चिंतित हैं तकनीकी व्यवधान और नई क्षमताओं की आवश्यकता - पत्रकारों को अब डेटा कौशल, डिजिटल टूलकिट, एआई-जागरूकता, मल्टीमीडिया उत्पादन और दर्शकों के जुड़ाव रणनीतियों की जरूरत है। लेकिन कई कार्यक्रमों में पकड़ नहीं ली है।

नैतिक, पेशेवर और व्यावसायिक चुनौतियां - गलत सूचना के युग में, मीडिया पर विश्वास कम हो रहा है, समाचार चक्र तेजी से घट रहे हैं, नए पत्रकारों की मांग पहले से कहीं अधिक है; फिर भी उनकी तैयारी गति नहीं पकड़ रही है। **यह क्यों मायने रखता है** पत्रकारिता शिक्षा में संकट केवल एक शैक्षणिक या संस्थागत मुद्दा नहीं है - इसका व्यापक सामाजिक परिणाम है। पत्रकारिता की गुणवत्ता पर प्रभाव - यदि नए पत्रकार सत्यापन, नैतिकता, डिजिटल उपकरण और आलोचनात्मक सोच में मजबूत प्रशिक्षण के बिना सामने

आते हैं तो कम गुणवत्ता वाली रिपोर्टिंग, उच्च जूट दरें, कमजोर वॉचडॉग पत्रकारिता तथा गलत सूचनाओं के प्रति अधिक संवेदनशीलता का खतरा बढ़ जाता है। लोकतंत्र और जवाबदेही - जैसा कि यूनेस्को द्वारा रेखांकित किया गया है: लोकतंत्र, संवाद और उत्तरदायित्व को बढ़ावा देने के लिए अच्छी तरह से प्रशिक्षित पत्रकार आवश्यक हैं। यदि शिक्षा कमजोर हो जाती है, तो प्रेस की जवाबदेही करने की क्षमता खराब हो सकती है।

उद्योग विकास के साथ संरेखा - पत्रकारिता पेशे में तेजी से परिवर्तन हो रहा है: डिजिटल प्लेटफॉर्म, बिजनेस मॉडल बदलाव, नई कहानी कहने वाले फॉर्म, एआई उपकरण आदि। शिक्षा को आगे बढ़ाना चाहिए - ऐसा करने में विफलता का मतलब है कि स्नातक मौजूदा नौकरियों (या भूमिकाओं) के लिए तैयार नहीं हैं। इक्विटी और समावेशन - जब शिक्षा कार्यक्रम पिछड़े होते हैं, तो कम संसाधन वाले स्थानों या क्षेत्रों के छात्र दोगुना चिंतित हो सकते हैं: अपर्याप्त प्रशिक्षण + रोजगार बाजार में कमी = पत्रकारिता में कम आवाज, कम विविधता।

संकट के मूल कारण पत्रकारिता शिक्षा में इसी अनिश्चित स्थिति में क्यों आई है? प्रमुख कारणों में संस्थागत अस्थिरता - शैक्षिक कार्यक्रम अक्सर उद्योग की आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम, शिक्षण कर्मचारी, उपकरण और शिक्षकों को अपडेट करने में संघर्ष

करते हैं। उदाहरण के लिए, अफ्रीका में रपट्यक्रम अप्रचलित हैं और संकाय... समकालीन मीडिया अभ्यास की वास्तविकताओं से अलग है। संसाधन और बुनियादी ढांचे की बाधाएं - कई स्कूलों में (विशेषकर कम आय वाले क्षेत्रों में) आधुनिक उपकरण, डिजिटल टूलकिट, सिंथेटिक या हाल ही में न्यूज़रूम अनुभव के साथ संकाय का अभाव होता है। नौकरी बाजार और छात्र प्रोत्साहन में परिवर्तन - पत्रकारिता रोजगार बाजार अधिक अनिश्चित है: कई स्थानों पर कम प्रकृतिक नौकरियां, अधिक अनुबंध/प्रीलॉस काम, कम वेतन यह छात्रों को निराश करता है और उनके मूल्य को उचित ठहराने के लिए कार्यक्रमों पर दबाव डालता है।

तकनीकी उथल-पुथल - डिजिटल प्लेटफॉर्म, एलआईएम, एआई, नागरिक पत्रकारिता, सोशल मीडिया ने समाचार का उत्पादन, वितरण और मुद्रितकरण कैसे किया है। शिक्षा को अनुकूलित करने में धीमा रहा है। अकादमिक जगत और उद्योग के बीच संबंध टूटना - कई शिक्षकों की शैक्षणिक योग्यता मजबूत हो सकती है लेकिन न्यूज़रूम का अनुभव कम होता है। सिद्धांत और अभ्यास के बीच अंतर बढ़ जाता है। धाना में **नवीनीकरण कैसा लग सकता है** संकट से निपटने के लिए कई मोर्चों पर कार्रवाई की आवश्यकता होगी। कुछ संभावित दिशाएं: पाठ्यक्रम सुधार - डेटा पत्रकारिता, डिजिटल उपकरण, मल्टीमीडिया स्टैटोरीलिंग, एआई साक्षरता, चिंतनशील कैरियर मार्गदर्शन - वर्तमान पत्रकारिता परिदृश्य के बारे में छात्रों के साथ पारदर्शी रहें: विकसित होती भूमिकाएं, नए अवसर (जैसे, डेटा पत्रकारिता, सामग्री रणनीति), लेकिन चुनौतियां भी। अनुकूलनशीलता और हस्तोत्तरणीय कौशल पर ध्यान केंद्रित करें - चूँकि मीडिया परिदृश्य तेजी से बदल रहा है, अनुकूलनीय कौशल (डेटा साक्षरता, आलोचनात्मक सोच, विभिन्न प्लेटफॉर्म पर कहानी सुनाना) सिखाए से स्नातकों को आगे बढ़ने में मदद

सत्यापन कौशल और क्लासिक नैतिकता और रिपोर्टिंग को एकीकृत करें पाठ्यक्रम सुधार - डेटा पत्रकारिता, डिजिटल उपकरण, मल्टीमीडिया स्टैटोरीलिंग, एआई साक्षरता, सत्यापन कौशल, साथ ही क्लासिक नैतिकता और रिपोर्टिंग-मूल सिद्धांतों को एकीकृत करना। उद्योग शिक्षा के बीच मजबूत संबंध - न्यूज़रूम और स्कूलों के बीच साझेदारी: इंटर-शिप, अतिथि चिकित्सकों के शिक्षण मांटेड्यूल, वास्तविक दुनिया की परियोजनाएं, मेंटरशिप। संकाय नवीनीकरण एवं व्यावसायिक विकास - समाचार कक्ष अनुभव वाले शिक्षकों को प्रोत्साहित करें; निरंतर प्रशिक्षण प्रदान करें ताकि शिक्षक वर्तमान से अवगत रहें।

समाधान निवेश - सुनिश्चित करें कि स्कूलों को आधुनिक उपकरणों (सॉफ्टवेयर, डिजिटल बुनियादी ढांचे) तक पहुंच प्राप्त हो, विशेष रूप से वंचित क्षेत्रों में। चिंतनशील कैरियर मार्गदर्शन - वर्तमान पत्रकारिता परिदृश्य के बारे में छात्रों के साथ पारदर्शी रहें: विकसित होती भूमिकाएं, नए अवसर (जैसे, डेटा पत्रकारिता, सामग्री रणनीति), लेकिन चुनौतियां भी। अनुकूलनशीलता और हस्तोत्तरणीय कौशल पर ध्यान केंद्रित करें - चूँकि मीडिया परिदृश्य तेजी से बदल रहा है, अनुकूलनीय कौशल (डेटा साक्षरता, आलोचनात्मक सोच, विभिन्न प्लेटफॉर्म पर कहानी सुनाना) सिखाए से स्नातकों को आगे बढ़ने में मदद

मिलेंगे, भले ही पारंपरिक न्यूज़रूम की भूमिकाएं सिकुड़ जाएं। वैश्विक/क्षेत्रीय संदर्भ संवेदनशीलता - वैश्विक जागरूकता का निर्माण करते हुए शिक्षा को स्थानीय मीडिया पारिस्थितिकी तंत्र (बाधाओं, कानूनी/नियामक संदर्भ, स्थानीय समाचार आवश्यकताओं सहित) के अनुरूप बनाया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, कोविड-19 के संदर्भ में दक्षिण पूर्व एशिया की पत्रकारिता शिक्षा पर लेख क्षेत्र-विशिष्ट दक्षताओं पर जोर देता है। 15. भारत पर एक टिप्पणी (और इसी तरह के संदर्भ) भारत (और इसी तरह के मीडिया बाजारों) के पाठकों के लिए कुछ विशेष अवलोकन उभर कर सामने आते हैं:

भारत पर यूनेस्को के लेख के अनुसार, रपत्रकारिता शिक्षा का विषय 1920 के दशक में शुरू हुआ और अब यह बढ़कर लगभग 900 कॉलेजों तक पहुंच गया है जो जनसंचार और पत्रकारिता कार्यक्रम प्रदान करते हैं। फिर भी कई भारतीय पत्रकारिता स्कूल अपने पाठ्यक्रम को अद्यतन करने में पीछे हैं: जबकि व्यापक भारतीय मीडिया और मनोरंजन उद्योग तेजी से बढ़ रहा है, "कक्षा प्रशिक्षण और उद्योग की आवश्यकताओं के बीच स्पष्ट अंतर बढ़ रहा है।" छात्र आधुनिक प्रौद्योगिकी-आधारित न्यूज़रूम के लिए तैयार किए बिना स्नातक हो सकते हैं: रन तो डिजिटल रूप से समझदार और न ही तकनीकी रूप से तैयार, और यह कौशल अंतर उन्हें पहले से ही अस्थिर नौकरी बाजार में कमजोर बना देता है।

भारतीय मानस के चितरे बाबू बालमुकुंद गुप्त

मोहन मंगलम

बाबू बालमुकुंद गुप्त खड़ी बोली और आधुनिक हिंदी साहित्य को स्थापित करने वाले लेखकों में से एक थे। वे शब्दों के अद्भुत पारखी थे। राष्ट्रीय नवजागरण एवं साहित्य-सूजन में वे काफी सक्रिय रहे। पत्रकारिता उनके लिए स्वाधीनता संग्राम का हथियार थी। उनकी शैक्षणिक पुस्तकें ज्योत्सना समृद्ध नहीं थीं, लेकिन स्वाध्याय, चिंतन और अनुभव के बल पर वे कई अखबारों में संपादक रहे और अपने संपादकीय लेखों तथा चर्चित स्तंभ 'शिवशंभु का चिट्ठा' के माध्यम से अपने समय के सर्वाधिक कद्दावर पत्रकार के रूप में स्थापित हो गए।

बालमुकुंद गुप्त का जन्म 14 नवम्बर 1865 को तत्कालीन पंजाब के रोहतक जिले के ग्राम गुडियानी में हुआ था। उनके पिता का नाम पूरनमल गोयल था। बालमुकुंद की आरंभिक शिक्षा उर्दू में हुई। बाद में उन्होंने हिंदी लिपि सीखी।

प्रारम्भिक शिक्षा के बाद उनका सम्पर्क झज्जर की संस्था 'रिफाहे आम सोसाइटी' के साथ हुआ। यह संस्था सम्प्रदायवादी का केन्द्र स्थल थी। गुप्त जी भी सम्प्रदायवादी बनने लगे और शत्रु: शत्रु:

उर्दू में काव्य रचना की ओर बढ़े।

बालमुकुंद गुप्त ने उर्दू पत्रकारिता से शुरुआत की। वे 'रिफाहे आम' अखबार और उर्दू मासिक 'मथुरा समाचार' में दीनदयाल शर्मा के सहयोगी रहे थे। उसके बाद वे चुनार के उर्दू अखबार 'अखबारे चुनार' के दो वर्ष संपादक रहे। 1888-1889 में लाहौर के उर्दू पत्र 'कोहेनूर' का संपादन किया। उन्होंने प्रतापनारायण मिश्र के संपर्क से हिंदी के पुराने साहित्य का अध्ययन किया और उन्हें अपना काव्यगुरु स्वीकार किया। गुप्त जी ने अपने घर गुडियानी में रहकर मुरादाबाद के 'भारत प्रताप' उर्दू मासिक का संपादन किया और इस बीच अंग्रेजी का अध्ययन करते रहे। 1893 में 'हिंदी बंगवासी' के सहायक संपादक होकर कलकत्ता गए और छह वर्ष तक काम किया। 1899 में 'भारत मित्र' कलकत्ता के वे संपादक भी रहे थे। वे 'हिन्दी बंगवासी' और 'भारत मित्र' को बुलन्दश्वर पर लेकर गए।

बाबू बालमुकुंद गुप्त के पास राष्ट्रवादी-जनवादी पत्रकार की पनी दुष्टि थी और कवि का संवेदनशील हृदय। इससे वे जनता के दुःख-तकलीफों को महसूस कर सके और उन्हें निर्भीकता से व्यक्त भी किया। उन्होंने अपनी

कविताओं में तत्कालीन राजनीतिक सवाल को उठाया। उनकी कविताओं का स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान था, वे जनता की भावनाओं को शब्द प्रदान करती थीं और देशभक्तों में नई ऊर्जा का संचार करती थीं। उन्होंने तत्कालीन जनता की हीनभावना को यथासम्भव दूर करने का प्रयास किया। उनकी कविताओं में किसानों के शोषण की प्रक्रियाओं का जैसा वर्णन है, उसके दर्शन महान कथाकार प्रेमचन्द के कथा साहित्य में होते हैं।

समुचे भारत के मानस के चितरे बाबू बालमुकुंद गुप्त में देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने अपने निबन्धों के द्वारा तत्कालीन भारतवासियों में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने का प्रयास किया। उन्होंने केवल देशभक्ति की भावना पर ही बल नहीं दिया बल्कि व्यंग्यात्मक शैली द्वारा ब्रिटिश सरकार की भारत विरोधी नीतियों पर भी प्रहार किया। वे सम्पूर्ण भारतवर्ष को स्वतन्त्र देखा चाहते थे, क्योंकि उनका विचार था कि ब्रिटिश शासक कभी भी भारतवासियों का भला नहीं कर सकते। उनका विचार था कि देश की स्वतन्त्रता के साथ-साथ सामाजिक जागरण भी नितान्त आवश्यक है। वे अपने लेखों में समाज को सुधारने की बात पर भी



बल देते थे। उन्होंने नारी सुधार पर बल दिया और सामाजिक कुरीतियों पर करारे व्यंग्य किए।

गुप्त जी के साहित्य पर गांधीवाद का प्रभाव सर्वत्र देखा जा सकता है। वे गांधी के अहिंसा, सत्य, अहिंसक विद्रोहों में पूर्ण विश्वास करते थे। उन्होंने जोरदार शब्दों में कहा कि हमें विदेशी माल को टुकड़ाकर स्वदेशी माल का प्रयोग करना चाहिए। लघु तथा कुटीर उद्योगों की स्थापना पर ध्यान देना चाहिए। स्वदेशी और

आत्मनिर्भरता की पैरोकारी करते हुए अपनी कविता 'आशीर्वाद' में वे लिखते हैं- र 'अपना बोया आप ही खावें, अपना कपड़ा आप बनावें।

बड़े सदा अपना व्यापार, चारों दिस हो मौज बहा।

माल विदेशी दूर भगावें, अपना चरखा आप चलावें।

कभी न भारत हो मुँहताज, सदा रहे टेसू का राज" बालमुकुंद गुप्त ने सहज, सरल एवं व्यावहारिक खड़ी बोली का प्रयोग किया। वस्तुतः उनकी भाषा तत्कालीन हिन्दी भाषा है। उनके निबन्धों में उर्दू तथा सामान्य बोलचाल वाले शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है फिर भी उन्होंने खड़ी बोली को साहित्यिक रूप प्रदान करने का भरसक प्रयास किया। उन्हें लोगकीतो से विशेष प्रेम था और उन्हीं की तर्ज पर उन्होंने तीखी राजनीतिक कविताएँ लिखी थीं। अपनी निर्भीकता से उन्होंने दूसरों में यह मनोबल उत्पन्न किया कि वे भी अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध बोलें।

बालमुकुंद गुप्त ने हिन्दी के उत्थान में विशेष योगदान दिया। वे जनभाषा के पक्षधर थे। उन्होंने जनभाषा को साहित्य में अपनाने पर जोर दिया।

इसी कारण से उनकी कविताओं में विभिन्न भाषाओं के शब्द धड़ल्ले से प्रयोग होते हैं। उनका ध्यान भाषा की सजावट पर उतना नहीं था, जितना कि संप्रेषण पर। संप्रेषण ही उनकी भाषा की कसौटी थी। उन्होंने हिन्दी कविता को सामाजिक सरोकारों से जोड़ा और जनता की पीड़ा को व्यक्त करने के लिए कविता की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने अपनी लेखनी से हिंदी गद्य व पद्य के विकास में भरपूर योगदान दिया।

कलकत्ता की जलवायु तथा काम की अधिकता के कारण उनका स्वास्थ्य खराब हो गया। जलवायु बदलने के लिए वे तत्कालीन बिहार में वैद्यनाथ धाम भी गए, परन्तु स्वास्थ्य में सुधार न होने के कारण वे गुडियानी के लिए रवाना हुए। दिल्ली पहुँचने पर उनके सम्बन्धियों ने इलाज के लिए रोक लिया। कई वैद्यों ने इलाज के प्रयास किए लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। 18 सितम्बर, 1907 को महज 42 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया। आज भी जब देश की पत्रकारिता, हिन्दी भाषा के उन्नयन तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास के पन्ने पलटें तो लोगो बाबू बालमुकुंद गुप्त के जिज्ञ के बिना यह इतिहास अधूरा है।

पूर्णांग उत्कल उ० न्या० मंडल ने ओडिया भाषा-संस्कृति संरक्षण पर खरसावां में की बैठक



ओडिया भाषा तथा संस्कृति संरक्षकों को किया सम्मानित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

खरसावां : 1936 के पहले तक एकीकृत उत्कल प्रदेश जो आज झारखंड, छत्तीसगढ़, बंगाल, आंध्र प्रदेश आदि राज्यों में फैला है उन सभी इलाकों में ओडिया भाषा-संस्कृति, साहित्य, कला आदि के संरक्षण निमित्त काम कर रहा एक सामाजिक संगठन पूर्णांग उत्कल उन्नयन न्यासी मंडल ने आज खरसावां में महत्वपूर्ण बैठक रखा. संगठन अपने

रजत जयंती समारोह खरसावां के काली मंदिर सामुदायिक भवन में आयोजित की. यहां कार्यक्रम आरंभ प्रभु जगन्नाथ की तस्वीर पर माल्यार्पण व दीप जलाकर कर किया गया. कार्यक्रम में मुख्य रूप से ओडिया भाषा, साहित्य संस्कृति के उत्थान पर चर्चा की गयी. ओडिया भाषा में पठन पाठन से लेकर भाषा-संस्कृति के प्रचार प्रसार पर भी काफी साकारात्मक चर्चा हुई.

कार्यक्रम के दौरान ओडिया भाषा-संस्कृति के क्षेत्र में कार्य करने वालों को भी सम्मानित किया गया. ओडिया कवि ज्योति लाल साहू, नाट्यकार विजय प्रताप सिंहदेव, सूर्य कुमार पति, अजय प्रधान, सुशांशु शेखर प्रधान, मुकेश प्रधान, परमेश्वर प्रधान, युधिष्ठिर मंडल, सुशांत पांडेगी, झलक हाजरा, आशुतोष आचार्य, जितेंद्र घोडाई, लेखक कार्तिक कुमार परीक्षा, सामाजिक कार्यकर्ता दिलीप प्रधान, शिक्षाविद् प्रो नागेश्वर प्रधान,



प्रभाकर मंडल, बिरोजा पति, नव कुमार मंडल, शशिंद्र दाश, प्रताप मिश्रा, लखिंद्र नायक समेत ओडिया शिक्षक को भी सम्मानित किया गया.

इस दौरान डॉ शरत चंद्र रथ द्वारा लिखित ओडिया पुस्तक 'महाप्रभु श्रीजगन्नाथ' का भी अतिथियों ने विमोचन किया. पुस्तक में जगन्नाथ संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित किया गया है. कार्यक्रम में ओडिया कवि ज्योति लाल साहू सिंहभूमि ओडिया भाषा में कविता पाठ कर जम कर बाहवाही बटोरी.

कार्यक्रम के दौरान संस्थान के अध्यक्ष सीता बल्लव महापात्र ने कहा कि भाषा-संस्कृति ही हमारी पहचान है. हमें अपनी भाषा पर गर्व की अनुभूति होती है. उन्होंने ओडिया भाषा संस्कृति के उत्थान में सभी को एकजुट कर हो कर कार्य करने पर जोर दिया. संस्थान के उपाध्यक्ष आर्य कुमार ज्ञानेंद्र ने कहा ओडिया भाषा, लिपि, कला व संस्कृति सभी को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है. इसे बचाने के लिये सभी की सहभागिता जरूरी है. प्रो नागेश्वर प्रधान ने कहा कि ओडिया भाषा के साथ

साथ संस्कृतिक धरोहरों को को संरक्षित करने के लिये सभी को एकजुट होकर कार्य करना होगा. उन्होंने ओडिया भाषा में बच्चों के पठन पाठन, आपसी वार्तालाप करने पर भी बल दिया. पत्रकार कार्तिक कुमार परिच्छा ने इलाके की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए ढाई हजार साल पुरानी तथा संस्कृत के बाद सर्वाधिक पांडुलिपी साहित्य धरोहर से सुसज्जित इस ओडिया भाषा के संरक्षण हेतु झारखंड एवं ओडिशा सरकार को मिलकर काम करने की मांग की. उन्होंने आज के नई पीढ़ी को जोड़ने पर बल दिया ताकि उन्हें उनकी वास्तविक अस्तित्व पर जानकारी हो सके.

कार्यक्रम में संगठन के सचिव राम नारायण मिश्र, संयुक्त सचिव कैलश चंद्र रथ, बिरोजा प्रसाद सतपथी, बासंती त्रिपाठी, शरत चंद्र चंद्र रथ, आरती कर, चक्रधर दाश, वंशीधर सेठी, सुनील महापात्र, आशुतोष आचार्य, हरिश चंद्र आचार्य, सुमंत चंद्र मोहंती, दिलीप प्रधान, सुशील पांडेगी, सुभाष बेहरा आदि उपस्थित थे. संचालन आदर्श सेवा संघ के सुमंत चंद्र मोहंती ने सबका मन मोह किया.

घाटशिला विधानसभा उप निर्वाचन सह मतगणना की तैयारी हेतु बैठक

निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों के अक्षरशः अनुपालन हो : कर्ण सत्यार्थी, जिला निर्वाचन अधिकारी



लिफ सभी व्यवस्थाएँ सुव्यवस्थित ढंग से सुनिश्चित की जाए। प्रत्येक टेबल पर प्रशिक्षित कर्मियों की प्रतिनियुक्ति, मतगणना पर्यवेक्षकों के सहायक अधिकारियों की उपस्थिति, वीडियोग्राफी व्यवस्था तथा नियंत्रण कक्ष से सतत निगरानी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। स्टॉन्ग रूम से ईवीएम की निकासी, मतगणना हॉल में टेबलों की संख्या,

मतगणना की क्रमिक प्रक्रिया एवं राउंडटार परिणाम संप्रेषण की व्यवस्था पर भी विशेष बल दिया गया। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने पोस्टल बैलेट एवं ईटीबीपीएस मतों की गणना को लेकर भी अधिकारियों को आवश्यक निर्देश देते हुए कहा कि गणना के दौरान निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित प्रोटोकॉल का कड़ाई से पालन किया जाए। उन्होंने कहा कि

सभी मतगणना टेबल पर पर्याप्त प्रकाश, संचार सुविधा एवं नियंत्रण की व्यवस्था रहे ताकि गणना प्रक्रिया बिना किसी व्यवधान के संपन्न हो सके।

वरिय पुलिस अधीक्षक ने को-ऑपरेटिव कॉलेज परिसर स्थित मतगणना स्थल के संपूर्ण परिसर को सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम सुनिश्चित किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट कहा कि बिना वैध पास के परिसर में अनाधिकृत प्रवेश वर्जित होगा। बैठक में सिटी एसपी कुमार शिवाशेष, एडीएम (लाॅ एंड ऑर्डर) भगीरथ प्रसाद, निर्वाचन पदाधिकारी घाटशिला सुनील चन्द्र, सहायक निर्वाचन पदाधिकारी समेत अन्य संबंधित पदाधिकारी उपस्थित रहे।

27 लाख रुपए के अफीम सहित चतरा में दो धराये

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड की चतरा पुलिस ने मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए 5.472 किलोग्राम अफीम जब्त की है। जब्त अफीम की कीमत लगभग 27 लाख रुपए आंकी गई है। इस अभियान में दो अंतरराज्यीय तस्करों को भी गिरफ्तार किया गया है।

एसपी सुमित अग्रवाल ने बताया कि उन्हें गुप्त सूचना मिली थी। यह सूचना पच्छिमबंगाल थाना क्षेत्र के ग्राम बंदरचुआ स्थित संतोषी माता मंदिर के रास्ते एक चार पहिया वाहन से बड़ी मात्रा में अवैध मादक पदार्थों

की खेप ले जाने के संबंध में थी। सूचना के सत्यापन और त्वरित कार्रवाई के लिए सिमरिया अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी शुभम कुमार खंडेलवाल के नेतृत्व में एक विशेष छापापारी दल का गठन किया गया। इस दल ने ग्राम बंदरचुआ स्थित संतोषी माता मंदिर के पास लेम्बोईया जाने वाले रास्ते पर एक कार को रोका।

कार की तलाशी लेने पर 5.472 किलोग्राम अवैध अफीम और दो मोबाइल फोन बरामद हुए। कार में सवार दो व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार तस्करों की पहचान गिधौर निवासी विक्रम



कुमार (22) और उदामोड़ निवासी राजन कुमार (20) के रूप में हुई है।

एसपी ने बताया कि गिरफ्तार तस्कर राजन कुमार का आपराधिक

इतिहास रहा है और वह पहले बरेली में जेल जा चुका है। तस्कर अफीम की यह खेप खूंटी जिले से ला रहे थे और इसे चतरा के रास्ते उत्तर प्रदेश में बेचने की योजना बना रहे थे।

गैंगस्टर के साथ पूर्व डीजीपी अनुराग गुप्ता का संबंध बाबूलाल करवायेंगे जांच, एनआईए को लिखेंगे पत्र

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड के प्रथम मुख्यमंत्री तथा नेता प्रतिपक्ष

बाबूलाल मरांडी ने गुरुवार को प्रेसवार्ता कर गैंगस्टर सुजीत सिन्हा और पूर्व डीजीपी अनुराग गुप्ता के बीच गठजोड़ का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि इन संबंधों की जांच एनआईए से कराने के लिए वह पत्र लिखेंगे। मरांडी ने आरोप लगाया कि अनुराग गुप्ता की नियुक्ति सरकार ने गिव एंड टेक फार्मूले के आधार पर की थी। मरांडी ने कहा कि पूरा मामला भारत माला प्रोजेक्ट पर वर्चस्व की लड़ाई और सुजीत सिन्हा की कोयलांचल शांति समिति से जुड़ा हुआ है। यह पूरा खेल पेट्री टेंडर, स्टोन चिप्स, जमीन दलाली

और अन्य अवैध कारोबारों के जरिए एक बड़ा नेटवर्क खड़ा करने की योजना से जुड़ा है

उन्होंने कहा कि इस प्रोजेक्ट पर नियंत्रण के लिए अनुराग गुप्ता ने सुजीत सिन्हा को चुना था। जिसमें अनुराग गुप्ता की 40% हिस्सेदारी थी। मरांडी ने कहा कि अनुराग गुप्ता का फर्जी इनकाउंटर इसी वर्चस्व की लड़ाई का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि जानकारी मिली है कि सुजीत सिन्हा की पत्नी रिया सिन्हा की गिरफ्तारी के बाद बड़े रहस्य उजागर हुए हैं। अनुराग गुप्ता और रिया सिन्हा के वाट्सअप चैट में अमन साहू के एनकाउंटर के लिए पैसे के लेनदेन और रंगदारी वसूली का पूरा हिसाब-किताब दर्ज है। मरांडी ने यह भी कहा कि चैट से यह



स्पष्ट हो गया है कि अनुराग गुप्ता ही कोयलांचल शांति समिति का किंगपिन है। बाबूलाल मरांडी ने कहा कि रिया सिन्हा ने पूछताछ में यह खुलासा किया है कि सुजीत सिन्हा जेल से ही कारोबारियों से रंगदारी मांगता था और प्रिंस खान के जरिए धमकाने का काम करता था। 13 अक्टूबर 2025 को रिया

सिन्हा और अन्य को पुलिस ने गिरफ्तार किया, जिसके पास से तीन पिस्टल, सात मैगजीन, 13 गोलीयां, एक कार और मोबाइल बरामद हुए। मरांडी ने कहा कि सुजीत सिन्हा, प्रिंस खान ने एक खतरनाक गठजोड़ बनाया था, जिसे रिया सिन्हा संभाल रही थी। राजधानी रांची में हाल के दिनों में रंगदारी कॉलस इसी गठजोड़ का नतीजा था। पाकिस्तान से ड्रॉन के जरिए पंजाब के रास्ते आए हथियारों से यह गैंग देशभर में कारोबारियों को धमका कर वसूली करता था। उन्होंने कहा कि इतना ही नहीं अनुराग गुप्ता दो विभागों सीआईडी और एसीबी के डीजी थे, जांच के नाम पर गुमानम पिटीशन के द्वारा लोगों को खूब लूटा गया।

अमृतसर में प्रोविजनल स्टोर पर हुई फायरिंग के पीछे जग्गू भगवानपुरिया गैंग का हाथ; पिस्तौल समेत दो गिरफ्तार



— गिरफ्तार आरोपी अपने विदेशी हैंडलर केशव शिवाला के निर्देश पर कर रहे थे काम : डीआईजी संदीप गोयल

— एक और आरोपी की पहचान, उसे पकड़ने के लिए छापेमारी जारी : एसएसपी मनिंदर सिंह अमृतसर, 13 नवंबर (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के निर्देशानुसार पंजाब को सुरक्षित राज्य बनाने के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत बड़ी सफलता हासिल करते हुए अमृतसर ग्रामीण पुलिस ने जॉडियाला गुरु में जबरन वसूली की कोशिश से जुड़ी गोलीबारी की घटना में शामिल दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है और उनके कब्जे से एक विदेशी पिस्तौल बरामद की है।

डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस (डीआईजी) बॉर्डर रेंज संदीप गोयल ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों की पहचान रवि, निवासी पंडोरी

वडैच, और उज्जवल हंस, निवासी बटाला रोड, अमृतसर के रूप में हुई है।

जानकारी के अनुसार, तीन अज्ञात बाइक सवार व्यक्तियों ने 6 नवंबर को जॉडियाला गुरु स्थित एक प्रोविजनल स्टोर के मालिक को डराने और जबरन वसूली के लिए उसकी दुकान पर गोलीयां चलाई थीं।

डीआईजी संदीप गोयल ने बताया कि गिरफ्तार किए गए दोनों व्यक्ति जग्गू भगवानपुरिया गैंग से जुड़े हुए हैं और वे अपने विदेशी हैंडलर केशव शिवाला के निर्देशों पर काम कर रहे थे।

उन्होंने बताया कि कार्रवाई के दौरान एक आरोपी ने पुलिस पर फायरिंग की, लेकिन पुलिस टीमों ने उसे काबू कर लिया। उन्होंने आगे कहा कि गोलीबारी की इस घटना में शामिल एक अन्य आरोपी की भी पहचान कर ली गई है और उसे पकड़ने के लिए पुलिस टीमों छापेमारी कर रही है।



सोनियर सुपरिटेण्डेंट ऑफ पुलिस (एसएसपी) अमृतसर ग्रामीण मनिंदर सिंह ने बताया कि घटना के तुरंत बाद डीएसपी (डी) गुरिंदर नागर और डीएसपी इंटरजीत सिंह की अगुवाई में पुलिस टीमों ने जांच शुरू कर दी थी। प्राप्त जानकारी के आधार पर तेजी से कार्रवाई करते हुए थाना जॉडियाला गुरु और मत्तेवाल की पुलिस टीमों ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया और उनके कब्जे से एक पिस्तौल भी बरामद की।

एसएसपी ने कहा कि इस मामले में आरोपियों के आपराधिक नेटवर्क और अन्य संबंधों का पता लगाने के लिए आगे की जांच जारी है।

इस संबंध में थाना मत्तेवाल, अमृतसर ग्रामीण में एकआईआर नंबर 60, दिनांक 12/11/2025 को भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धाराएँ 109, 132 और 221 तथा आर्म एक्ट की धाराएँ 25 और 27 के तहत मामला दर्ज किया गया है।

“युद्ध नशा विरुद्ध मुहिम” के तहत हल्का राजासांसी के कोऑर्डिनेटर और ब्लॉक कोऑर्डिनेटरों के साथ एक महत्वपूर्ण और विशेष बैठक



अमृतसर 13 नवंबर (साहिल बेरी)

श्री नीरज कुमार, उप कप्तान पुलिस, सब-डिवीजन राजासांसी ने अपने कार्यालय में “युद्ध नशा विरुद्ध मुहिम” के तहत हल्का राजासांसी के कोऑर्डिनेटर और ब्लॉक कोऑर्डिनेटरों के साथ एक महत्वपूर्ण और विशेष बैठक की।

बैठक के दौरान पंजाब सरकार, माननीय मुख्यमंत्री पंजाब, माननीय डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस पंजाब, डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल

पुलिस बॉर्डर रेंज अमृतसर, श्री मनिंदर सिंह (आई.पी.एस.) वरिष्ठ कप्तान पुलिस अमृतसर ग्रामीण और हल्का इंचार्ज मैडम सोनिया मान द्वारा जारी किए गए निर्देशों तथा नशे के जड़ से उन्मूलन के लिए बनाई गई रणनीति पर विस्तार से चर्चा की गई।

बैठक में कोऑर्डिनेटर और ब्लॉक कोऑर्डिनेटरों से नशा रोकथाम के लिए जमीनी स्तर की फीडबैक ली गई। युद्ध नशा विरुद्ध मुहिम के तहत जिला अमृतसर

ग्रामीण में बड़े स्मगलरों, ड्रग पैडलरों, सप्लायरों और नशा तस्करी से जुड़े तत्वों के खिलाफ लगातार और ठोस कार्रवाई की जा रही है, जिसके दौरान कई बड़ी गिरफ्तारियाँ और रिकवरी की गई हैं।

पंजाब भर में नशा तस्करी से जुड़े कई प्रमुख तत्वों को कानूनी कार्रवाई के तहत जेल भेजा गया है और इन लोगों द्वारा नशे के माध्यम से बनाई गई संपत्तियों को कानूनी प्रक्रिया के तहत सील, फ्रीज और ध्वस्त भी

किया गया है। हालांकि नशे के पूरी तरह उन्मूलन के लिए अभी भी बहुत काम करना बाकी है और इस प्रयास में आम जनता का सहयोग सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि सामाजिक सहयोग के बिना नशे के खिलाफ यह लड़ाई अधूरी है।

अंत में, पंजाब पुलिस ने यह सुनिश्चित किया कि समाज में व्याप्त हर तरह की बुराई को समाप्त करने के लिए वह पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध, सक्षम और संकल्पित है।